उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed-SE-101

निर्देशन एवं परामर्श

खण्ड-1 निर्देशन एवं परामर्श का परिचय 1-48

इकाई-1 : निर्देशन एवं परामर्श : परिभाषा, लक्ष्य व क्षेत्र

इकाई-2 : परामर्शदाता के कौशल एवं क्षमतायें

इकाई-3 : विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन एवं परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

खण्ड-2 आत्मछवि और आत्मसम्मान का विकास/प्रवर्धन 49-76

इकाई-4 : स्व की अवधारणा : मानव और उसके भावों की समझ और परिवर्तन

इकाई-5 : व्यक्तित्व विकास और स्वायत्तता की वृद्धि

इकाई-6 : बच्चों के आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक की भूमिका

खण्ड-3 समावेशित शिक्षा में निर्देशन और परामर्श 77-112

इकाई-7 : परामर्श के प्रकार : बाल केन्द्रित, सहयोगात्मक परिवार और निर्देशन औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में।

इकाई-8 : समूह निर्देशनः समूह नेतृत्व, तरीकें और समूह प्रक्रियाएँ।

इकाई-9 : समूह निर्देशन में चुनौतियाँ

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed-SE-101

निर्देशन एवं परामर्श

खण्ड

1

निर्देशन एवं परामर्श का परिचय

इकाई –1 **07–20**

निर्देशन एवं परामर्श : परिभाषा, लक्ष्य व क्षेत्र

इकाई–2 **21–28**

परामर्शदाता के कौशल एवं क्षमतायें

इकाई –3 **29–48**

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन एवं परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रो0 के0 एन0 सिंह	कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 पी 0के 0पाण्डेय	प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 के0 एस0 मिश्रा	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 पी0 के0 साहू	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 कल्पलता पाण्डेय	अचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी	सहायक-आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ0 दिनेश सिंह	सहायक-आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

श्री दिलीप कुमार दीक्षित	समन्वयक सह प्रवक्ता, पूर्वांचल खादी ग्रामोद्योग, विकास समिति झूँसी, प्रयागराज (इकाई 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9)

सम्पादक

प्रो0 धनञ्जय यादव	आचार्य एवं विभागध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

परिमापक

प्रो0 पी 0के0 पाण्डेय	प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

समन्वयक

डॉ. नीता मिश्रा	परामर्शदाता, (विशेष शिक्षा), शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

© उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज - 2020

ISBN- 978–93–83328–96–3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को राजर्षि अण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में, मिमियोग्राफी (वक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
नोट : पाठय सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आकड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय, उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन – उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज– 211021

प्रकाशकः उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज कुलसचिव, कर्नल विनय कुमार, द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित, 2024

मुद्रकः सिग्नस इन्फार्मेशन सल्यूशन प्रा0लि0, लोढ़ा सुप्रीमस साकी विहार रोड, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई।

ETH-015

खण्ड परिचय

भौतिक एवं वैज्ञानिक युग में जहां एक ओर तकनीकी विकास एवं सूचना प्रौद्योगिकी ने क्रान्ति ला दी है। वहीं दूसरी ओर मानव की व्यक्तिगत समस्याए, जटिलताएं एवं अपेक्षायें भी अपने चरमोत्कर्ष पर है। आज मनुष्य सभी क्षेत्रों में आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक एवं वैश्विक रूप से निरन्तर सफलता एवं विकास के पथ पर अग्रसर है। सभी सफलताओं एवं उपलब्धियों के बावजूद भी वह एक समय व स्थान विशेष पर रूक जाता है। संशय में पड़कर, वह निर्णय लेने एवं अपनी राह चुनने में तरह-तरह की परेशानियों का अनुभव करने लगता है। सभी स्थिति में वहॉं उसे किसी विशेषज्ञ, मित्र दोस्त व सहायक की आवश्यकता पड़ती है जो उसके कठिनाईयों एवं परेशानियों को दूर करने में मददगार होता है, परामर्श प्रार्थी को मार्ग दर्शन प्रदान करता है उसे उस सम-विषम स्थान एवं परिस्थितियों से बाहर निकालता है।

वैश्विक स्तर पर इस प्रकार की जटिलताओं एवं झंझावातों से बाहर निकालने में निर्देशन सेवाओं को महत्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान में विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं को उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके साथ ही समाज में भी निर्देशन एव परामर्श सेवा व सहायता प्रदान करने वाले विशेषज्ञ अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे है जिससे छात्र-छात्राएं, अभिभावक एवं सामान्य सेवार्थी भी लाभ प्राप्त कर रहे है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य सामान्य शिक्षा व्यवस्था में कार्य कर रहे शिक्षकगण प्रशिक्षणार्थियों के साथ-साथ विशेष शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के क्षेत्र में कार्यरत प्रशिक्षणार्थियों के साथ ही विशेष शिक्षकों व जनसामान्य को भी निर्देशन व परामर्श की बारीकियों व कलाओं से परिचित कराना है।

खण्ड एक

खण्ड एक का शीर्षक है 'निर्देशन एवं परामर्श' का परिचय जिसके अन्तर्गत 3 इकाईयॉं है। इकाई एक निर्देशन एवं परामर्श के विषय में विस्तृत वर्णन किया गया है। जिसमें उसकी परिभाषा, लक्ष्य एवं क्षेत्र का वर्णन किया गया है। इकाई दो में परामर्शदाता के कौशल एवं क्षमताओं का वर्णन किया गया है। इकाई तीन में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन एवं परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका का उल्लेख किया गया है।

इकाई– 1

निर्देशन एवं परामर्श

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्‌देश्य

1.3 निर्देशन का परिचय

1.3.1 परिभाषा

1.3.2 निर्देशन के लक्ष्य

1.3.3 निर्देशन का क्षेत्र

1.4 परामर्श का अर्थ,

1.4.1 परामर्श की परिभाषा

1.4.2 परामर्श के लक्ष्य

1.4.3 परामर्श का क्षेत्र

1.5 सारांश

1.6 अभ्यास कार्य

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 उपयोगी पुस्तकें

प्रस्तावना

ज्यादातर विद्यार्थी जब बिना किसी सुसंगठित पूर्व योजना के एवं बिना अपनी रूचि, अभिक्षमता तथा योग्यता आदि को जाने बिना किसी कार्य को सम्पादित करते है तो प्रायः उन्हें असफलता प्राप्त होती है। इस प्रकार से प्राप्त असफलता उनके जीवन को निराशा की तरफ ले जाती है। ऐसे भी कुछ विद्यार्थी मिल जाते है जिन्हें विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक माहौल अथवा ज्ञात/अज्ञात कारणों से विद्यालय से विमोह उत्पन्न हो जाता है और वे विद्यालय जाने के स्थान पर अन्यत्र समय बिताने लगते है। इन सारी समस्याओं की जड़ का सही समाधान निर्देशन ही है जो उन्हें यह बताता है कि

किसी कार्य का कब करे, किस तरह से करें एवं किस प्रकार से करे कि सहजता के साथ सफलता प्राप्त कर सकें।

वास्तव में इन सभी परिस्थितियों में निर्देशन एवं परामर्श अत्यन्त आवश्यक है। निर्देशन के द्वारा व्यक्ति सेवार्थी की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान किया जा सकता है। प्रस्तुत इकाई में हम निर्देशन का परिचय के अन्तर्गत निर्देशन की परिभाषा, निर्देशन का विकास, निर्देशन के लक्ष्य व उसके क्षेत्र इत्यादि की विस्तृत चर्चा करेंगें। इसके अलावा प्रस्तुत इकाई में हम परामर्श के अर्थ परिभाषा, लक्ष्य एवं क्षेत्र का भी विस्तृत वर्णन करेंगे।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर निर्देशन के अर्थ को समझ सकेंगे।
- निर्देशन के विकास को ज्ञान कर सकेंगें।
- निर्देशन के लक्ष्य को समझ कर सकेंगे।
- निर्देशन के क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- इसमें परामर्श के अर्थ एवं परिभाषा को समझ सकेगें।
- परामर्श के लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- परामर्श के क्षेत्र व महल से परिचित को सकेगें।

1.3 निर्देशन का परिचय (Introduction to Guidance)

हम जानते है कि जीवन में जब समस्याएं आती है तो उसके समाधान के लिए व्यक्ति किसी के सहयोग की अपेक्षा करता है, सहयोग प्राप्त करने को यह अपेक्षा मनुष्य में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त रहती है। यह अलग बात है कि यह आवश्यकता विकास की विभिन्न अवस्थाओं में परिस्थितिनुसार बदलती रहती है। निर्देशन में इस निरन्तर परिवर्तनशील आवश्यकता को पूरा करने का सामर्थ्य होता है।

निर्देशन अंग्रेजी शब्द **Guidance** का हिन्दी रूपान्तरण हैं जिसका अर्थ होता है मार्ग दिखाना या मार्गदर्शन। इस प्रकार मार्गदर्शन एक व्यक्ति द्वारा किसी व्यक्ति को सहायता या परामर्श प्रदान करने की प्रक्रिया का नाम है।

निर्देशन का शब्दिक विश्लेषण करने पर इसका अर्थ निर्दिष्ट करना, मार्गदिखाना इत्यादि है। जहां तक दिव्यांगजनों के संदर्भ में निर्देशन की बात आती है तो इसकी महत्ता कई गुना बढ़ जाती है क्योंकि दिव्यांग व्यक्ति या बालक में एक या एक से अधिक ज्ञानेन्द्रिया क्षतिग्रस्त या अभावग्रस्त होते है। जिसके कारण यह व्यक्ति या बालक अपने हम उम्र के व्यक्तियों से पिछड़ जाते है। अतः निर्देशन एक मात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा इन्हें पुनः पूनर्वासित कर समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सकता है। दिव्यांगजनों को निर्देशन डूबते को तिनके का नही बल्कि नाव का सहारा देता है। निर्देशन ही इनके अन्दर सकारात्मक सोच पैदाकर इनकी रूचि शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार जीवन पथ पर आगे बढ़ने का मार्गदर्शन करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क- नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख- इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1- निर्देशन किस अंग्रेजी शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है?

....

2- बालकों में निर्देशन कैसा सोच पैदा करता है?

....

3- निर्देशन का शाब्दिक विशलेषण करने पर क्या अर्थ होता है?

....

1.3.1 निर्देशन की परिभाषा (Definition of Guidance)

निर्देशन का अर्थ है एक व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को निर्देशित करना। निर्देशन आदेश (Oder) से भिन्न होता है क्योंकि आदेश में अधिकार भाव की प्रधानता होता है जबकि निर्देशन एक प्रकार का सलाह या सुझाव होता है। किसी व्यक्ति या बालक को दी जाने वाली सहायतार्थ सलाह निर्देशन कहलाता है।

- **ब्रिवर (Brewer)** के अनुसार ''निर्देशन एक ऐसा प्रक्रम है जो व्यक्ति में अपनी समस्याओं को हल करने में आत्म निर्देशन की क्षमता का विकास करता है।''
- **स्ट्रम्स एवं लिण्डक्विस्ट (Strups and Lindquest)** के अनुसार ''निर्देशन व्यक्ति के अपने लिये एवं समाज के लिए अधिकतम लाभदायक दिशा में उसकी सम्भावित अधिकतम क्षमता तक विकास में सहायक तथा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।''
- **''स्किनर''** नवयुवकों को स्व अपने प्रति दूसरे के प्रति तथा परिस्थितियों के प्रति समायोजन करने की प्रक्रिया मार्गदर्शन है।
- **''क्रो एंड क्रो''** मार्ग पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित एवं विशेषज्ञता प्राप्त पुरूषों तथा महिलाओं द्वारा किसी भी आयु के व्यक्ति को सहायता प्रदान करता है ताकि वह अपने जीवन की क्रियाओं को व्यवस्थित कर सके, अपने निजी दृष्टिकोण विकसित कर सकें, अपने आप अपने निर्णय ले सके और अपने जीवन का बोझ उठा सकें।
- **मायर्स के अनुसार** ''व्यावसायिक निर्देशन व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों और प्रशिक्षण से प्राप्त क्षमताओं को संरक्षित करने का एक मूल प्रयास है। इस संरक्षण के लिए वह व्यक्ति को उन समस्त साधनों में सम्पन्न बनाता है जिससे वह अपनी और समाज की सन्तुष्टि के लिए अपनी उच्चतम शक्तियों का अन्वेषण कर सके।''
- **शर्ले हैमरिन ने** निर्देशन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''व्यक्ति को स्वयं पहचानने में सहायता करना जिससे वह अपने जीवन में आगे बढ़ सके, निर्देशन कहलाता है।''
- **माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार** ''निर्देशन लड़कों तथा लड़कियों को सहायता प्रदान करने की ऐसी कठिन कला है जो उन्हें अपने और उस संसार, जहां उन्हें रचना और काम करना है, से सम्बन्धित तत्वों के पूर्ण प्रकाश में अपने भविष्य के लिए बुद्धिमत्ता पूर्वक योजना बनाने की योग्यता प्रदान करती है।''
- **जोन्स के अनुसार** ''व्यक्ति का उसके विकास के लिए आत्म-निर्देशन के लिए दी सहायता में निर्देशन निहित है। यह सहायता व्यक्ति को भी दी जा सकती है और समूह को भीं।''
- **डब्ल्यू0 एल0 रिन्कल तथा आर0एल0 गिलक्रिस्ट** ''निर्देशन का अर्थ है विद्यार्थी में उपर्युक्त तथा प्राप्त होने योग्य उद्देश्यों के निर्धारित कर सकने तथा उन्हें सिद्ध करने के लिए अपेक्षित योग्यता का विकास करने में सहायता देना तथा प्रेरित करना। इसके आवश्यक अंग निम्न प्रकार है- उद्देश्य की प्राप्ति करना तथा अनुकूल अनुभवों का

प्रावधान करना। बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन के बिना दिये गये शिक्षण को अच्छे शिक्षण की श्रेणी में नही रखा जा सकता है और अच्छे शिक्षण के बिना दिया गया निर्देशन भी अधूरा होता है। इस प्रकार शिक्षण तथा निर्देशन एक दूसरे से सम्बन्धित है।''

- **गुड** ''निर्देशन गतिशील अन्तव्यैक्तिक सम्बन्धों की ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के दृष्टिकोणों तथा बाद के व्यवहार को प्रभावित करने के लिए स्थापित की जाती है।''

निर्देशन के संदर्भ में उपलब्ध जो अनेक परिभाषाएँ ऊपर प्रस्तुत की गयी है उसके कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु अग्रलिखित है :-

1. निर्देशन का परम उद्देश्य लक्ष्य प्राप्त की दिशा में गति करना है।
2. निर्देशन एक शैक्षिक, सतत, सुव्यवस्थित व क्रमबद्ध प्रक्रिया होती है।
3. निर्देशन एक व्यक्ति द्वारा अन्य दूसरे व्यक्ति को दी जाने वाली ऐसी सहायता है जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करना चाहता है और दूसरा व्यक्ति देने को तत्पर होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4 – स्किनर के अनुसार निर्देशन की परिभाषा लिखिए ।

....

5 – निर्देशन का परम उद्देश्य लक्ष्य प्रप्ति के दिशा में क्या करना है ।

....

1.3.2 निर्देशन का लक्ष्य (Aims of Guidance)

निर्देशन एक विस्तृत व व्यवस्थित प्रक्रिया है। अतः उपरोक्त सभी वर्णनों के आधार पर हम निर्देशन के लक्ष्य को निम्नलिखित रूप से बिन्दुवार अंकित कर सकते है। जो दिव्यांगजनों के लिए भी उपयोगी व प्रभावी है।

1. सामान्य व्यक्तियों व बालकों के साथ-साथ दिव्यांग बालकों के लिए भी प्रभावी व उपयोगिता का अध्ययन करता है।
2. दिव्यांग बच्चा समाज की मुख्य धारा से क्यों बाहर (Drop out) हो रहा है? का अध्ययन करने में भी सहायता प्रदान करता है।

3. सभी प्रकार के बच्चों व व्यक्तियों के व्यक्तित्व का अध्ययन कर उनकी कमियों व मजबूतियों का उद्घाटन करता है।
4. निर्देशन के द्वारा सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन एवं व्यक्ति की उपयोगिता का भी प्रभाव देखा जाता है।
5. 'का चुप साधि रहा बलवाना' की तर्ज पर निर्देशन के द्वारा ही दिव्यांग बच्चों को प्रेरित कर उनकी सम्पूर्ण शक्तियों का उपयोग कराया जाता है।
6. निर्देशन के द्वारा ही निर्देशन प्राप्तकर्ता के विभिन्न कौशलों को बढ़ावा प्रदान किया जाता है।
7. यह व्यक्ति या बालक को प्रोत्साहित कर उन्हें आगे बढ़ाने का उचित मार्ग प्रशस्त करता है।
8. दिव्यांगता के क्षेत्र में परामर्श व निर्देशन के द्वारा ही अभिभावकों को सहायता प्रदान कर उनमें भावनात्मक सन्तुलन बनाये रखने का लक्ष्य ही सुधार व विकास की प्रक्रिया को जन्म देता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क- नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख- इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

6. निर्देशन एक विस्तृत व व्यवस्थित क्या है?

....

7. निर्देशन के द्वारा कौशलों को क्या प्रदान किया जाता है?

....

1.3.3 निर्देशन के क्षेत्र (Arias of Guidance)

निर्देशन का क्षेत्र विस्तृत व व्यापक होने के साथ साथ एक सीमित दायरा प्रदान करता है। निर्देशन शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बन गया है। आज यह धीरे-धीरे विस्तारित होकर कई रूपों में फैल चुका है।

निर्देशन व्यक्ति के पूर्णता के साथ, उसके समग्र विकास के साथ उसकी खुशहाली के साथ, समाज में बालक या व्यक्ति को महत्वपूर्ण बनाने के उद्देश्य के साथ जुड़ चुका है। इस प्रकार से निर्देशन के क्षेत्र का विकास

अनेक दिशाओं में सम्पन्न हुआ है। अतः हम इसे निम्नलिखित प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत कर सकते है।

- शैक्षिक निर्देशन
- व्यावसायिक निर्देशन
- स्वास्थ्य निर्देशन
- व्यक्तिगत निर्देशन
- विकासात्मक निर्देशन
- विश्रामकाल सम्बन्धित निर्देशन या मनोरंजनात्मक निर्देशन

शैक्षिक निर्देशन

इस प्रकार के निर्देशन में सामान्य व दिव्यांग दोनों प्रकार के बालकों व व्यक्तियों की शिक्षा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माहौल प्रदान किया जाता है। यह इनके शैक्षणिक जीवन, विवेक पूर्ण कार्य अथवा योजना के लिए प्रभावी होता है। जहां तक असामान्य व दिव्यांगजनों को शिक्षा का तात्पर्य उनके लिये उचित माहौल, पाठ्यचर्या, पाठक्रम और सम्पूर्ण शैक्षणिक गतिविधियों से युक्त होता है जो उनके लिए उपयोगी प्रभावी होता है। इस प्रकार शैक्षणिक निर्देशन विद्यालय तथा सामाजिक क्रियाकलापों का सम्बन्धित रूप होता है।

व्यावसायिक निर्देशन - इस प्रकार के निर्देशन में बालक या व्यक्ति को उचित व्यवसाय का चयन करने में सहायता देकर उसमें प्रवेश करने की तैयारी एवं उसकी प्रगति करने का प्रयास किया जाता है। व्यावसायिक निर्देशन विद्यालयों में पाठ्यक्रमों में तथा इसके बाहर के दुनिया में दिया जा सकता है।

स्वास्थ्य निर्देशन – स्वास्थ्य निर्देशन में सामान्य अथवा असामान्य बालकों के शारीरिक मानसिक विकृतियों समस्याओं व स्वस्थता इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। जिसके आधार पर उन्हें रोगों से मुक्त, समस्याओं से वंचित तथा खुशमय जीवन जीने की कला का ज्ञान दिया जाता है। Health is Wealth 'स्वास्थ्य ही धन है' के उक्ति को चरितार्थ कर निरोग होने के ज्ञान को प्रदान किया जाता है।

व्यक्तिगत निर्देशन – व्यक्तिगत निर्देशन में एक समय में एक ही व्यक्ति को उसकी समस्याओं से निदान प्राप्त करने में सहायता की जाती है। वह समस्या चाहे शिक्षा जगत से हो या व्यावसायिक अथवा उसके व्यक्तिगत जीवन से

ही क्यों न हो। इसमें व्यक्ति व निर्देशक केवल समस्याओं व उससे जुड़े मुद्दों पर विचार विनियम एवं निदान प्राप्त करते है। एकांगी होने के कारण अधिक समय एवं कम उपयोगी होता है।

विकासात्मक निर्देशन विकास प्रक्रिया में सम्बन्धित समस्याओं या प्रश्नों के समाधान के लिए दिये जाने वाले निर्देशन को विकासात्मक निर्देशन कहते है। इसमें निर्देशन व्यक्ति को अपने सर्वोत्तम ढ़ंग से विकसित होने में सहयोग करता है।

विश्रामकाल सम्बन्धित निर्देशन या मनोरंजनात्मक निर्देशन - व्यक्ति के जीवन में प्राय: कुछ घण्टे अथवा सप्ताह व महीनों में कुछ समय फुर्सत के होते है। इन क्षणों व पलों को वह सदुपयोग करके अपने, शौक, सामाजिक, शारीरिक गतिविधियों एवं सुखी जीवन व मानव-कल्याण में लगाता है। उसे सुख की अनुभूति होती है तथा जीवन में आगे बढ़ने व सुखी होने के लिए इस प्रकार का निर्देशन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

8 . शैक्षिक निर्देशन का क्षेत्र किससे सम्बन्धित है?

....

9 . व्यक्तिगत निर्देशन से एक समय में कितने व्यक्ति की सहायता की जाती है?

....

10. विश्राम कालीन निर्देशन को किस अन्य नाम से भी जाना जाता है?

....

परामर्श का अर्थ (Meaning of Counselling)

प्राचीन समय समय से ही प्रत्येक शिक्षक विद्वान बुजुर्ग माता-पिता, भाई-बहन आदि समस्याग्रस्त व्यक्ति को परामर्श देते आये है। परन्तु आज इस जटिल व क्लिस्ट समाज में बढ़ती हुई आवश्यकताओं, इच्छाओं,

आकांक्षाओं, प्रत्याशाओं आदि के चलते समुचित परामर्श देना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। परामर्श एक सहायता प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य सलाह प्रदान करना और उन व्यक्तियों को सहारा देना है। जिनमें सामाजिक क्रिया-कलापों में समस्या उत्पन्न हो रही है या उनको जो कि जीवन की नयी परिस्थितियों का सामना कर रहे है वहां सलाह की जरूरत होती है।

1.4.1- परामर्श की परिभाषा (Definition of Counselling)

बोरडिन के अनुसार (Bordim) ''परामर्श एक प्रक्रिया है जिसमें साक्षात्कार के माध्यम से व्यक्ति को उसकी समस्याओं के समाधान में सहायता की जाती है।''

अक्षम व्यक्तियों के लिए सफल पुनर्जीव मुख्य रूप से उसके परिवार के सदस्यों की भागीदारी पर निर्भर करता है। मानसिक मंदता के क्षेत्र में परामर्श के द्वारा अभिभावकों को सहायता प्रदान कर सकते है। भावनात्मक संतुलन को बनाएं रखने के लिए उनकी अभिवृत्तियों को बदलने के लिए और अन्तः क्रिया में सुधार लाने के लिए जिससे कि उनके परिवार के कार्यकलापों और खुशी में कम से कम प्रभाव पड़े।

जोन्स के अनुसार- '' साक्षात्कार के समान परामर्श में आमने-सामने का व्यक्ति से व्यक्ति का संपर्क होता है।

मायर्स के अनुसार- '' परामर्श का अभिप्राय है दो व्यक्तियों का सम्पर्क जिसमें एक व्यक्ति को किसी प्रकार की सहायता दी जाती है।'' परामर्श की अब तक बहुत से परिभाषायें प्राप्त है। परिभाषाओं एवं सम्प्रत्ययों के विश्लेषण के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि परामर्श का मूलतत्व दो व्यक्तियों के मध्य ऐसा सम्पर्क है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे को समझने में सहायता प्रदान करता है। परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से दिव्यांगजनों को भी सहायता प्रदान किया जाता है।

उद्देश्य- किसी भी क्रिया के लिए उद्देश्यों का निर्धारण आवश्यक होता है। परामर्श प्रक्रिया के निम्नलिखित उद्देश्य होते है-

1. उचित सूचना प्रदान करके सम्बन्धित व्यक्ति को उसकी समस्याओं के समायोजन के लिए संतुष्टिजनक स्तर प्रदान करना।

2. सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन की परिस्थितियों की बेहतर समझ स्वीकृति और समायोजन के लिए सुविधा प्रदान करना।
3. सम्बन्धित व्यक्ति को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को अधिक प्रभावकारी एवं संतुष्टिजनक ढ़ंग से निर्वहन करने के योग्य बनाना।
4. सम्बन्धित व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास की प्रगति हेतु उसे प्रत्यक्ष रूप से परामर्श देना।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

11. ''साक्षात्कार'' के समान परामर्श में आमने सामने का व्यक्ति से व्यक्ति का सम्पर्क होता है। किसका कथन है?

....

12. परामर्श का मूल तत्व दो व्यक्तियों के मध्य किससे है?

....

1.4.2 परामर्श के लक्ष्य (Aims of Counselling)

परामर्श के निम्नलिखित लक्ष्य होते है

1. जूझना (कोपिंग) कौशल को बढ़ावा देना/प्रोत्साहित करना।
2. व्यवहार परिवर्तन को सम्भव करना।
3. अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों में सुधार लाना।
4. निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देना।
5. व्यक्ति के गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों क्षमता में वृद्धि करना।
6. अपने अन्दर समस्या समाधान करने सम्बन्धी दृष्टिकोण का विकास करना।

उपरोक्त लक्ष्यों को निम्न प्रकार भी व्याख्यायित किया जा सकता है–

1. परामर्श प्रक्रिया के द्वारा परामर्शप्रार्थी को जटिल व समस्यात्मक परिस्थितियों से निपटने की दक्षता एवं कार्य कुशलता प्राप्त होती है।
2. परामर्श प्रक्रिया में असामान्य एवं अवांछित व्यवहारों का परिमार्जन किया जाता है। समाज के अनुकूल व्यवहार का प्रकटीकरण भी किया जाता है।
3. परामर्श के द्वारा ही सभी प्रकार के सम्बन्धों का अध्ययन एवं उसमें सुधार का सकारात्मक पहल किया जाता है।
4. परामर्श के माध्यम से सभी परिस्थितियों में निर्णय लेने के सद्‌गुणों का विकास किया गया है।
5. मानवीय सम्बन्धों एवं व्यक्ति के गुणात्मक एवं मात्रात्मक इत्यादि क्षमताओं में परामर्श के द्वारा ही वृद्धि किया जा सकता है।
6. परामर्श के माध्यम से ही व्यक्ति सभी परिस्थितियों में समस्या समाधान करने के गुणों व कौशलों के साथ स्वस्थ्य दृष्टिकोण का विकास करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

13. व्यवहार में परिवर्तन करना परामर्श का क्या है ।

....

....

14. परामर्श प्रक्रिया में आवांछित व्यवहारों का क्या किया जाता है ।

....

1.4.3 परामर्श के क्षेत्र (Areas of counselling)

निर्देशन एवं परामर्श का परिचय

परामर्श सेवाओं को किसी भी प्रकार की समस्याओं के संदर्भ में प्रदान किया जा सकता है जिसके क्षेत्र निम्नलिखित है-

1. शैक्षणिक परामर्श
2. व्यावसायिक परामर्श
3. विवाह पूर्व सम्बन्ध परामर्श
4. दिव्यांग (नि:शक्त) व्यक्ति को परामर्श देना
5. पारिवारिक परामर्श
6. जेनेटिक (वंशानुगत) परामर्श
7. अन्त:व्यैक्तिक परामर्श।

1. शैक्षणिक क्षेत्र से तात्पर्य शिक्षा एवं उससे सम्बन्धित क्रियाओं व कार्य व्यवहारों से है। परामर्श शिक्षा के द्वारा बहुत से परिवर्तन एवं क्रिया व्यवहारों को रेखांकित किया जाता है।

2. व्यावसायिक परामर्श का क्षेत्र व्यवसाय से होता है। जिसके माध्यम से व्यक्ति आर्थिक रूप से सम्पन्न एवं व्यवसायोन्मुख होता है।

3. विवाह पूर्व सम्बन्ध-विवाह से पहले सभी सम्बन्धों एवं पक्षों का अध्ययन एवं विश्लेषण भी इस क्षेत्र के माध्यम से किया जाता है।

4. दिव्यांग (नि:शक्त) व्यक्ति को परामर्श देना-नि:शक्त, असामान्य एवं प्रतिभाशाली बच्चों को परामर्श के माध्यम से सशक्त एवं समाज का उपयोगी सदस्य बनाया जा सकता है।

5. परामर्श वंशानुगत एवं जेनेटिक सुधारों पर निर्भर होकर एक परिवर्तनशील व सहज मार्ग को जन्म देती है।

6. परामर्श के माध्यम से व्यक्ति अपने अन्तर्मन व ब्यैक्तिक गुणों के साथ-साथ सकारात्मक परिवर्तन की तरफ अग्रसर होता है। जो मानवीय पक्षों का सफलता पूर्वक अध्ययन भी करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

15 . व्यावसासिक परामर्श का सम्बन्ध किससे है?

....

16. परामर्श के माध्यम से व्यक्ति किस परिवर्तन की तरफ अग्रसर होता है?

....

1.2 सारांश

इस इकाई में हमने निर्देशन की परिभाषा, उसके अर्थ, निर्देशन के लक्ष्य व उसके क्षेत्र के बारे में अध्ययन किया। निर्देशन के अलावा परामर्श के बारे में भी विस्तृत चर्चा की गयी है। जिसमें परामर्श के अर्थ, परिभाषा को व्याख्यायित किया गया है। साथ ही साथ परामर्श के लक्ष्य एवं उसके क्षेत्रों का भी निरूपण किया गया है। इन सभी चीजों के द्वारा छात्र-छात्राओं को परामर्श एवं निर्देशन के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान कराया गया, जो उनके भावी जीवन में उपयोगी होगा। निर्देशन व परामर्श हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। इसके द्वारा ही मनुष्य जीवन की जटिल परिस्थितियों में अपने आप को स्थिर व उपयोगी रख सकता है।

अतः यह इकाई अपने प्रकरण निर्देशन एवं परामर्श का समन्वय एवं उसकी सार्थकता स्थापित करने में सहायक सिद्ध होती है।

1.6 अभ्यास कार्य

1. स्किनर के अनुसार निर्देशन की परिभाषा को निरूपित कीजिए।
2. निर्देशन के लक्ष्यानुसार दिव्यांगजन को किस प्रकार निरूपित किया गया है?
3. व्यावसायिक निर्देशन के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. परामर्श के अर्थ को उद्घाटित करें।

5. मायर्स के अनुसार परामर्श क्या हैं, संक्षिप्त जानकारी प्रदान करें?
6. परामर्श के दो लक्ष्यों को संक्षिप्त में लिखें।
7. जेनेटिक्स परामर्श पर संक्षिप्त नोट्स लिखे।

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. **Guidance**
2. **सकारात्मक सोच**
3. **निर्दिष्ट करना, मार्ग दिखाना**
4. **''नव युवको को स्व अपने प्रति दूसरे के प्रति तथा परिस्थितियो के प्रति समायोजन करने की प्रक्रिया मागदर्शन है।''**
5. **गति ।**
6. **प्रक्रिया ।**
7. **बढ़ावा ।**
8. **शिक्षा ।**
9. **एक व्यक्ति की**
10. **मनोरंजनात्मक निर्देशन**
11. **जोन्स**
12. **सम्पर्क**
13. **लक्ष्य**
14. **परिमार्जन**
15. **व्यवसाय व जिविकोपार्जन**
16. **सकारात्मक**

1.8. उपयोगी पुस्तकें

- निर्देशन एवं परामर्श- डा0वी0सी0राय

  An Introduction to Guidance – Crow & Crow
- निर्देशन और परामर्श - सत्यपाल दुग्गल

इकाई-2

परामर्श दाता के कौशल एवं क्षमतायें

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 परामर्शदाता के कौशल एवं क्षमतायें

- **2.3.1** परामर्शदाता
- **2.3.2** परामर्शदाता के गुण
- **2.3.3** परामर्शदाता के कौशल

2.4 परामर्शदाता की क्षमतायें

2.5 सारांश

2.6 अभ्यास कार्य

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.8 उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

जब कोई व्यक्ति या प्राणी दुविधा, असमंजस इत्यादि स्थिति में होता है, तो परामर्श दाता की मदद से वह उस स्थिति से उबर पाता है। इसलिए निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परामर्श के द्वारा ही सामान्य व आसामान्य सभी प्रकार के बालकों को समझकर परामर्शदाता उन्हें सही जगह व स्थितियों में सम्मिलित कराता है। परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता के कुछ विशेष गुण, कौशल एवं क्षमतायें होती है जिनके माध्यम से वह परामर्श की प्रक्रिया को सफल बनाता है। परामर्शप्रार्थी इस गुणों व कौशलों से अपने को सन्तुष्टता की स्थिति में रखता है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे-

- परामर्शदाता के विषय में जान सकेंगे।
- परामर्शदाता के वांछित गुणों को धारण कर सकेंगे।
- परामर्श प्रक्रिया में एक परामर्शदाता के द्वारा किन-किन कौशलों का प्रयोग किया जाता है इत्यादि का अध्ययन कर सकेंगे।

- परामर्शदाता में निहित क्षमताओं को सकेंगे।
- परामर्श प्रक्रिया को सफल बनाने में परामर्शदाता द्वारा प्रयुक्त गुणों एवं क्षमताओं को जान करेंगे।

2.3 परामर्शदाता के कौशल व क्षमतायें

2.3.1 परामर्शदाता (The Counsellor)-

परामर्श दाता वह व्यक्ति होता है जिसके पास पूर्वज्ञान कौशल, प्रशिक्षण, सहनशक्ति और व्यावसायिक योग्यता होती है जिसके द्वारा वह समस्या से ग्रस्त व्यक्ति/अक्षम व दिव्यांगजन की सहायता कर सकता है। परामर्शदाता वह व्यक्ति होता है जो कि-

1. दूसरों की समस्या व परिस्थिति के प्रति संवेदनशील हो।
2. सेवार्थी और समस्याओं के प्रति सहानुभूति पूर्ण अभिवृत्ति वाला होना चाहिए।
3. सेवार्थी की समस्याओं का मूल्यांकन करते समय पक्षपात रहित और उद्देश्यपूर्ण मनोवृत्ति होनी चाहिए।
4. उसमें ऐसी योग्यता होनी चाहिए कि वह सेवार्थी को भावनात्मक वातावरण उपलब्ध करवाए जिससे कि सेवार्थी अपनी समस्याओं को स्वतंत्र रूप से जाहिर कर सकें।
5. परामर्शदाता सेवार्थी का सबसे अच्छा मित्र होना चाहिए।
6. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अच्छी तरह समझ सके।

2.3.2 परामर्शदाता के गुण (Qualities of Counsellor)

किसी अच्छे परामर्शदाता में अधोलिखित आवश्यक गुण होने चाहिए-

1. अच्छा वक्ता एवं खुले विचारों वाला हो।
2. प्रत्यक्षीकरण करने वाला हो।
3. अनिर्णायक अभिवृत्ति।
4. संवेदनशीलता।
5. सहानुभूति।
6. वस्तुनिष्ठता।
7. सच्चाई।
8. प्रभुत्व रहित।
9. सुनने की योग्यता।
10. सकारात्मक दृष्टिकोण।
11. प्रभावपूर्वक सम्प्रेषण कौशल।
12. आत्म ज्ञान और आत्म सम्मान।

13. सुरक्षा, विश्वास और उत्साह उत्पन्न करने के गुण होने चाहिए।
14. गोपनीय बरतने वाला हों।
15. मित्रवत व समानुभूति पूर्वक विचार करने वाला हो।
16. सम-विषम सभी परिस्थितियों में समभाव रखने वाला हो।

2.3.3 परामर्शदाता कौशल (Skills of Counsellor)

परामर्शदाता न केवल सूचनाएं प्रदान करता है, वह समस्याओं के लिए कार्य को भी शामिल करता है। जिसमें सकारात्मक अभिवृत्ति और कौशलों की आवश्यकता होती हैं। इससे ग्राहक व दिव्यांगजनों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए उपलब्ध स्त्रोतों का प्रयोग करने में सहायता भी प्रदान करता है। परामर्शदाता के कौशलों में सुनना, समझना और क्रियात्मक योजनाओं के साथ-साथ नैदानिक योजनाओं को भी सम्मिलित किया गया है।

1. सुनने का कौशल (Listening Skills)

परामर्श के इस स्तर पर परामर्शदाता को चाहिए कि वह सेवार्थी को अपने बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें। परामर्शदाता को चाहिए कि वह सेवार्थी के शाब्दिक और अशाब्दिक व्यवहार को परखे जिसमें कि ठीक मुद्रा, आंखों का सम्पर्क, शान्ति की जरूरत होती है। सेवार्थी को सक्रिय रूप से सुनना भी परामर्शदाता की एक और महत्ता है। इसका अर्थ सेवार्थी की तरफ पूर्ण ध्यान देने से है, जिससे कि उनके बारे में जाना जा सके। इसमें न केवल ग्राहक के बोले गये शब्दों को सुनने को शामिल किया जाता है, परन्तु उनकी भावनाओं को समझने की कोशिश की जाती है और उनकी समस्या से सम्बन्धित स्पष्टीकरण में सहायता करते है। इसके उपरान्त उन समस्याओं का चयन किया जाता है जिनकी तरफ तत्काल ध्यान की जरूरत है। परामर्शदाता प्रतिबिम्बित भावार्थ विचार अर्थ और अनुभूति रूपी कौशलों का प्रयोग करते हुए आगे बढ़ता है।

2. समझने का कौशल (Understanding Skills)

सुनने व समझने के कौशल को परामर्शदाता के द्वारा सभी स्तरों पर उपयोग किया जाता है इसमें मुख्य केन्द्र बिन्दु सेवार्थी को उसकी समस्या को समझने में सहायता करना होता है। परामर्शदाता किन्हीं भी दो कौशलों को मिलाकर उपयोग कर सकता है, जिसमें शामिल है- सारांश सूचनाएँ देना, सामान्य सार की पहचान करना, कोई भी सोच या अनुभव जो कि विवादास्पद हों, सेवार्थी के समक्ष रखने चाहिए। सम्पर्क बनाना और विभिन्न स्थितियों की सोच के बारे में सेवार्थी की मदद करना या विकल्प सुझाव बताना।

3. कार्य योजना के निर्माण का कौशल (Build Skill of Action Planning)

परामर्श के इस रूप में इसमें परामर्शदाता सेवार्थी के साथ समस्या के सम्भव समाधान के बारे में वार्तालाप करने में सहायता करता है। जो लाभ मिल रही है और जो समस्याएं उनसे सम्बन्धित है उनका विभिन्न प्रकार के विकल्पों द्वारा स्पष्टीकरण करना होता है। परामर्शदाता क्रियाशील योजनाएं बनाने में सेवार्थी की मदद करता है जिससे कि वे लक्ष्य को प्राप्त कर सके। परामर्शदाता सेवार्थी में अपने अधिकार की रक्षा करने के कौशलों का विकास करता है, जो कि निर्णायित योजनाओं को सक्रिय रूप से करने में अन्यथा कठिनाई महसूस करते है। परामर्शदाता सक्रिय रूप से सेवार्थी को विकल्प ढूंढने में, निर्णय लेने में, क्रियात्मक योजना का विकास करने में और कार्यक्रम के मूल्याकंन में मदद करता है। यदि जरूरत पड़ती है तो खुला दरबार नीति (Open door policy) आगे और सम्पर्क करने के लिए अपनाई जाती है। परामर्शदाता एवं परामर्श प्रार्थी के बीच खुले दिल से संवाद होता है जिसके आधार पर आगे की क्रिया योजना का निर्माण होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1- परामर्शदाता के कौशलों में किन मुख्य कौशलों को शामिल किया गया है।

....

2 – परामर्शदाता अच्छा वक्ता होने के साथ-साथ कैसे विचार धारा वाला होना चाहिए।

....

3 – परामर्शदाता और परामर्श प्रार्थी के बीच खुले दिल से क्या होना चाहिए।

....

2.4 परामर्श की क्षमतायें (Competencies of Counsellor)

परामर्श दाता के कौशल एवं क्षमतायें

विभिन्न विद्वानों में इसे लेकर काफी मत-मतान्तर है किन्तु कुछ महत्वपूर्ण क्षमताएं इस प्रकार है :-

1. **बौद्धिक क्षमता**- परामर्शदाता में इतना कौशल होना चाहिए कि वह अनुभव द्वारा अथवा औपचारिक अध्यापन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान का यथास्थान उपयोग कर सके। इसके लिए उसे बौद्धिक रूप से सशक्त एवं सक्षम रहने की जरूरत है।
2. **समृद्ध ज्ञान की क्षमता**- परामर्शदाता के लिए अपने आप-पास के सांस्कृतिक एवं आर्थिक जगत का सामान्य ज्ञान पर्याप्त मात्रा में अपेक्षित है। विशेष रूप से दिव्यांगता व परामर्श जगत की उसको विस्तृत ज्ञान होना चाहिए।
3. **विशेष ज्ञान की क्षमता**- अक्षमता का क्षेत्र परामर्शदाता का विशिष्ट क्षेत्र है। परामर्शदाता को अक्षमता सम्बन्धी जानकारी में विशेषता प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। उसे केवल भविष्य के शिक्षा की जानकारी ही नही होनी चाहिए, अपितु यह भी पता होना चाहिए कि उसके लिए कौन सी अर्हताएं एवं प्रशिक्षण वांछनीय है। उसे व्यक्तियों के स्वभाव, उसकी मनोवैज्ञानिक कमजोरियों व अक्षमताओं के सम्बन्ध में भी बाहरी जानकारी होनी चाहिए।
4. **विशेष कौशल की क्षमता**- परामर्शदाता को कुछ विशेष कौशलों व तकनीकों के प्रयोग में कुशल होना चाहिए। ये तकनीक है- परीक्षण की तकनीक, साक्षात्कार की तकनीक तथा नियोजन की तकनीक। इन तकनीकों के अतिरिक्त उसे व्यावसायिक सूचनाएँ एकत्र करने, अक्षम बच्चों को समझने एवं उपलब्ध सुविधाओं के वितरण एवं अन्य मापन परीक्षण की जानकारी भी अपेक्षित है।
5. **विशेष वैयक्तिक गुण की क्षमता**- उपर्युक्त गुणों एवं विशेषताओं के अतिरिक्त परामर्शदाता में कुछ विशेष वैयक्तिक गुण की क्षमता भी आवश्यक है। उसमें सहानुभूति, सहिष्णुता, वस्तुगतता अपेक्षित है। उसका व्यक्तित्व सन्तुलित एवं निष्ठावान होना चाहिए। परामर्शदाता को यथा संभव विवेकशील, उत्साही तथा दूसरों की कमजोरियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए क्योंकि परामर्शदाता एक असाधारण एवं विशिष्ट व्यक्ति होता है। जो परामर्श प्रार्थी के मनोभावों व उद्वेगों का समझने की क्षमता एवं गुणों को धारण करता है।

<u>इसके अतिरिक्त किसी अच्छे परामर्शदाता में होने वाली कुछ महत्वपूर्ण क्षमतायें निम्न प्रकार वर्णित से भी की जा सकती है-</u>

1. परामर्शदाता किसी व्यक्ति की समस्या से सम्बद्ध सूचना की व्याख्या करने के गुणों व क्षमताओं से युक्त होना आवश्यक है।
2. सुनने, जाँच करने तथा सलाह के प्रक्रम की युक्ति में परामर्शदाता को दक्ष एवं सक्षम रहने की आवश्यकता है।
3. अक्षम बच्चों के जिन समस्याओं के समाधान तक शिक्षक व्यक्ति आसानी से न पहुंच सके, उसमें परामर्शदाता सहायक उपकरणों को गतिशील करने की क्षमता से सम्पन्न होना चाहिए।
4. सामान्य तथा असामान्य बच्चों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने की क्षमता एवं कौशल से युक्त होना परामर्शदाता का प्रवल क्षमता है।
5. जब विशेष आवश्यकता वाले बच्चों या विद्यार्थी किसी समस्या का समाधान खोजने में सहायता चाह रहा हो तब परामर्शदाता को रचनात्मक कार्यवाही की आवश्यकता एवं क्षमता को धारण करना चाहिए।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4 – परामर्श क्षमताएं मुख्य रूप से कितने प्रकार की होती हैं।

....

5 – बौद्धिक रूप से सशक्त एवं सक्षम रहने की क्षमता क्या कहलाती हैं।

....

6 – परामर्श केन्द्रित होना चाहिए।

....

7 – परामर्शदाता को विशेष परिस्थितियों में किस क्षमता से सम्पन्न होना चाहिए।

....

6. विशेष परिस्थितियों में समायोजन करने की क्षमता से सम्पन्न होना चाहिए।

2.5 सारांश

इस इकाई के अन्तर्गत अपने परामर्श प्रक्रिया से सम्बन्धित परामर्शदाता के गुण व उसके कार्यो के बारे में अध्ययन किया परामर्शदाता कैसा होना चाहिए? उसके गुण व कौशल क्या क्या होते हैं? इत्यादि का अध्ययन किया गया।

परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता एवं परामर्शप्रार्थी का विशेष महत्व होता है। ये सभी एक दूसरे के पूरक होते है। इस प्रकार हमने परामर्श दाता की विशेष क्षमताओं का भी अध्ययन किया। परामर्श क्षमताओं के द्वारा ही एक परामर्श दाता प्रभावी काउंन्सेलिंग कर सकने में सक्षम होता है। अतः ये सभी साधन परामर्शदाता के लिए आवश्यक तत्वों में निहित है।

इस प्रकार हमने यह अध्ययन किया है कि-

- परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता की क्या भूमिका है?
- परामर्शदाता के विशेष गुणों का अध्ययन किया।
- परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता को किन कौशलों का प्रयोग कब व कैसे करना चाहिए इत्यादि का अध्ययन किया?
- परामर्शदाता में निहित कौशलों एवं आवश्यक क्षमताओं का भी अध्ययन इस इकाई के अन्तर्गत किया गया है।
- यह इकाई हमें परामर्शदाता के कौशलों एवं आवश्यक क्षमताओं का ज्ञान कराने में एक पथ प्रदर्शक का कार्य करती है।

अभ्यास कार्य

1. परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता की क्या पहचान है?
2. परामर्शदाता के गुणों को बिन्दुवार प्रदर्शित करें?
3. परामर्शदाता किन कौशलों का प्रयोग करते हुए परामर्श प्रक्रिया को प्रभावी बना सकता है।
4. टिप्पणी लिखिए?
   (i) विशेष वैयक्तिक गुण
   (ii) परामर्श दाता
   (iii) समृध्द ज्ञान
   (iv) बौद्धिक क्षमता
5. परामर्श प्रक्रिया में प्रयुक्त किन्ही दो कौशलों में बारे में विस्तृत चर्चा करें।

2.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1- सुनना, समझना, क्रियात्मक और नैदानिक कौशल।

2- खुले विचार धारा वाला।

3- संवाद

4- 5 प्रकार

5- बौद्धिक क्षमता

6- प्रार्थी केन्द्रित

7- समायोजन की क्षमता।

2.8 उपयोगी पुस्तकें

- शिक्षा में निर्देशन परामर्श - डा0सीताराम जायसवाल
- निर्देशन एवं परामर्श - डा0 वी0सी0 राय
- काउन्सलिंग एण्ड गाइडेन्स - राव0एस0नारायण

इकाई– 3

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चें

3.3.1 प्रतिभावान व पिछड़े बालक

3.3.2 निशक्त जन अधिनियम (पी0डब्लू0डी0)–1995 के अनुसार विशेष बच्चों का वर्गीकरण

3.3.3 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (एन0टी0ए0)–1999 के अनुसार विशेष बच्चों का वर्गीकरण

3.3.4 संशोधित नि:शक्त जन अधिनियम (आर0 पी0 डब्लू0 डी0 एक्ट) 2016 के अनुसार विशेष बच्चों का वर्गीकरण

3.4 विशेष बच्चों के लिए परामर्शदाता की भूमिका

3.5 सारांश

3.6 अभ्यास कार्य

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

परामर्श एक गम्भीर व जटिल प्रक्रिया है जिसमें परामर्शदाता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लेकिन जब इसमें विशेष प्रकार के बच्चों की बात आती है तो यह और भी गम्भीर एवं जटिल हो जाती है क्योंकि ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों से प्राय: भिन्न होते है। ये बच्चे प्राय: बुद्धि लब्धि में या तो बहुत उच्च बुद्धि वाले होते है या बहुत बुद्धि वाले निम्न होते है।

इन बच्चों में एक या एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियाँ (Sense organs) विकृत या प्रभावित होती है। जिसके कारण इन बच्चों को विशेष परामर्श एवं सहायता की आवश्यकता होती है। जिसे परामर्शदाता पूरा करता है। अत: इन बच्चों के लिए एक परामर्शदाता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो परामर्श द्वारा इन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ता है। इस प्रकार हम विभिन्न अधिनियमों के द्वारा विशेष प्रकार के बच्चों के वर्गीकरण एवं प्रकारों पर चर्चा करेंगे।

प्रतिभाशाली बच्चों एवं पिछड़े बालकों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले विभिन्न श्रेणियों के बच्चे जैसे श्रवण अक्षम, दृष्टि अक्षम, मानसिक मंद एवं अस्थि अक्षम बालकों के साथ अन्य विशेष बालकों का अध्ययन करेगें। नि:शक्त जन अधिनियम 1995 व संशोधित नि:शक्त जन अधिनियम 2016 के अनुसार 7 व 21 प्रकार के अक्षम बालकों का भी विस्तृत अध्ययन इस इकाई में अन्तर्गत करेगें।

इन सभी के लिए एक अच्छे परामर्शदाता की भूमिका नितान्त आवश्यक एवं प्रभावी मानी गयी है। अत: इसमें हम परामर्शदाता के भूमिका का विशद् एवं प्रभावी अध्ययन की परिकल्पना को चिन्हित करते हुए आगे बढ़ेगें।

3.2 उद्देश्य -

इस इकाई में हम प्रमुख रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समझने का प्रयास करेंगे। प्रतिभाशाली व पिछड़े बालकों के विशेष जरूरतों को भी जाँच सकेंगे। अत: इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ सकेगें कि-

- विशेष बच्चों से क्या तात्पर्य है?
- प्रतिभाशाली व पिछड़े बालक कौन होते है?
- विभिन्न प्रकार के अधिनियमों द्वारा विशेष बच्चों का क्या वर्गीकरण है?
- भारतीय संदर्भ में सामान्य व अक्षम बच्चों का क्या स्वरूप है?

- पी0डब्लू0डी0एक्ट 1995, एन0टी0ए0 1999 एवं आर0पी0डब्लू0डी0 एक्ट 2014-16 के अन्दर निहित दिव्यांग बच्चों के बारे में क्या प्रवधान है।
- इन सभी के अतिरिक्त एक परामर्शदाता की इन बच्चों के परामर्श एवं निर्देशन में क्या भूमिका है?

3.3 विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (Children with SpecialNeeds)

ऐसे बच्चे जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक स्तर पर अपने हम उम्र के सामान्य बच्चों से औसतन कम या अधिक होते है। विशेष बच्चे कहलाते है। इसके दो पक्ष है

1. **धनात्मक पक्ष** – प्रतिभाशाली, ईश्वरीय प्रद्त्त, मेधावी बालक
2. **गुणात्मक पक्ष** – अक्षम या विकलांग बच्चे किन्तु वर्तमान समय में यह पक्ष भी सकारात्मकता की श्रेणी में रखा गया है। ये बच्चे भी अब किसी स्तर पर सामान्य बच्चों से कम नहीं है। ऐसे बच्चों को थोड़ा प्रशिक्षण, सहयोग एवं अवसरों की जरूरत होती है। जिसके द्वारा वह अपनी उपलब्धि एवं प्रशस्ति समाज के सम्मुख लाने में समर्थ होते है।

इस प्रकार के बच्चे सामान्य तौर पर कई श्रेणीयों एवं वर्गों में विभाजित है, जिसका आगे वर्णन किया गया है।

अतः विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कुछ विशेष जरूरते होती है। जिसे पूरा करके अथवा सहयोग देकर इन्हें भी समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सकता है। अर्थात् इन्हें भी सफलता पूर्वक पुनर्वासित कर सकते है। ये भी हमारे शरीर रूपी समाज के एक समृद्ध एवं उपयोगी अंग के समान है। जिसके अभाव में एक स्वस्थ्य शरीर की कल्पना नहीं की जा सकती वैसे ही इनके बिना एक आदर्श एवं सभ्य समाज की कल्पना नही की जा सकती है।

उपरोक्त सभी तथ्य इस ओर संकेत करते है कि कक्षा में कुछ छात्र ऐसे हो सकते है जो अन्य छात्रों से सामाजिक, बौद्धिक, शारीरिक एवं संवेगात्मक रूप से अलग हो। इन छात्रों की शिक्षा दीक्षा एवं निर्देशन के लिए शिक्षक को इनकी विशेष आवश्यकताओं के बारे में जानना आवश्यक है। यहां यह स्पष्ट करना असंगत नही होगा कि वही बच्चे विशिष्ट कहलाते

है। जो औसत अथवा सामान्य बालकों से काफी भिन्न और पृथक होते है और जिनको विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता होती है। जे0टी0हण्ट ने ''विशिष्ट मानसिक बालकों की परिभाषा देते हुए कहा है कि विशिष्ट बालक वे है जो शारीरिक, संवेगात्मक या सामाजिक विशेषताओं में सामान्य बालकों से इतने पृथक है कि उनकी क्षमताओं के अधिकतम विकासार्थ विशिष्ट शिक्षा सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है।''

"Exceptional children are those who deviate from the average child in physical, mental, emotional or social characteristics to such an extent that they require special educational services in order to develop their maximum copacity."

क्रुक शैंक (Cruck Shank) ने भी विशिष्ट बालकों के संबन्ध में इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये है। उनके शब्दों में '' विशिष्ट बालक वह है जो सामान्य बौद्धिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक वृद्धि एवं विकास में इतने पृथक है कि वे नियमित तथा सामान्य विद्यालय, शैक्षणिक कार्यो से अधिकतम लाभान्वित नहीं हो सकते तथा जिनके लिए विशिष्ट कक्षाओं एवं अतिरिक्त शिक्षण व सेवाओं की आवश्यकता होती है।'' इस परिभाषा के अनुसार विशिष्ट बालकों में सामान्य बालकों से निम्नलिखित दृष्टि में पृथकता दृष्टिगोचर होती है।

1. शारीरिक क्षेत्रों में पृथकता-
   - (i) गमनात्मक विकलांगता- हाथ, पैर, दृष्टि, श्रवण, कर्ण सम्बन्धी खराबी
   - (ii) आंतरिक विकलांगता जैसे- हृदय की खराबी, फेफड़ों की दुर्बलता, ग्रंथियों की खराबी।
2. मानसिक क्षेत्र में पृथकता जैसे -
   - (i) प्रतिभा सम्पन्नता
   - (ii) मंद बुद्धि
3. व्यक्तिगत संतुलन के क्षेत्र में पृथकता -
   - (i) संवेगात्मक असंतुलन
   - (ii) सामाजिक अंसतुलन

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख।- इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 - ऐसे बच्चे जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक स्तर पर सामान्य बच्चों

से औसतन कम या अधिक होते है, कहलाते हैं।

....

2 - विशेष बच्चों के लिए किस प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती है?

....

3 - मानसिक क्षेत्र में पृथकता क्या है?

....

3.3.1 प्रतिभावान व पिछड़े बालक

प्रतिभावान बालक - ऐसे बालक बुद्धि लब्धि (I.Q.) में काफी उच्च होते है। इनमें सृजनात्मक व रचनात्मक शक्ति होती है। यह सभी कलाओं में दक्ष एवं कार्यकुशल होते है।

हालिंगबर्थ के अनुसार - '' पढ़ाई में साधारण से अच्छे होने के साथ - साथ ये कला, गायन इत्यादि में भी रूचि लेते है।''

स्क्रीनर एवं हैरीमैन ने प्रतिभावान बालकों की निम्नलिखित विशेषताएं बतायी है-

1. बुद्धि परीक्षाओं में उच्च बुद्धि लब्धि (130-170) तक
2. मानसिक प्रक्रिया में तीव्रता व तीव्र चिन्तन
3. विशाल शब्द कोश
4. दैनिक कार्यों में विभिन्नता
5. सामान्य ज्ञान में श्रेष्ठता
6. सामान्य अध्ययन में रूचि
7. अमूर्त विषयों में चिन्तन व रूचि

8. अध्ययन में अद्वितीय सफलता
9. आश्चर्यजनक अन्तर्दृष्टि का परिणाम
10. पाठ्यविषयों में अत्याधिक रूचि या अरूचि
11. विद्यालय में कार्यों के प्रति बहुधा उदासीनता
12. किसी विशेष विषय या कार्य में प्रवीणता
13. किसी भी बौद्धिक व सृजन कार्य की विशेष योग्यता
14. सभी परिस्थितियों में सकारात्मक दृष्टिकोण
15. जीवन अथवा क्षेत्र में व्याप्त कठिनाइयों एवं चुनौतियों को स्वीकार करने की क्षमता।

पिछड़े बालक- ऐसे बालक जो प्राय: सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, धार्मिक, भावात्मक एवं बौद्धिक स्तर पर सामान्य बालकों से भिन्न या पिछड़े होते है। पिछड़े बालक कहलाते है। किन्तु ऐसा नही है कि ये बेकार होते है अथवा किसी कार्य को ठीक से नही कर सकते है। ये बालक हमारे द्वारा निर्मित भौतिक मानकों पर पिछड़ गये है अथवा असफल हो जाते है। इसलिए इन्हें पिछड़े बालक की संज्ञा दी गयी है। कम बुद्धि के बालक, अक्षम बालक इत्यादि को इस श्रेणी में रख सकते है।

3.3.2 नि:शक्त जन अधिनियम 1995 के अनुसार विशेष बच्चों का वर्गीकरण

यह अधिनियम नि:शक्तजनों के अधिकारों के संरक्षण, समान अवसर, पूर्ण सहभागिता पर बल देता है। इसमें विशेष बच्चों (दिव्यांगों) के लिए जोरदार वकालत की गयी है। इस अधिनियम के अनुसार दिव्यांग या विशेष बच्चों को मुख्य 7 रूपों में बाँटा गया है। जो इस प्रकार है-

1. अल्प दृष्टि (Low Vision)
2. अन्धापन (Blindness)
3. मानसिक मंदता (Mental Retardation)
4. मानसिक बीमारी (Mental Illness)
5. श्रवण क्षतिग्रस्त (Hearing Impaired)
6. शारीरिक अक्षम/अस्थि विकलांग (Locomotar Disability)
7. कुष्ठ रोग से ग्रसित व ठीक हुआ व्यक्ति (Leprosy Coured)

इस प्रकार इन बच्चों के लिए शिक्षा, रोजगार सहित सभी बिन्दुओं पर सरकार द्वारा सेवायें प्रदान की जाती है। जिसमेंपरामर्श भी प्रमुख है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

3.3.3 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (1999) के अनुसार विशेष बच्चों का वर्गीकरण

ऐसे विशेष या दिव्यांग बच्चे जो अक्षमता की दृष्टि से अति गम्भीर या गम्भीर हो। उनके माता-पिता या अभिभावकों को यह चिन्ता होती है कि हमारे न रहने के बाद इन बच्चों का क्या होगा?

ऐसे ज्वलन्त प्रश्नों के निवारणार्थ सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय भारत सरकार ने एक न्यास (Trust) का गठन किया। जिसे राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (1999) कहा जाता है।

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित दिव्यांगजनों या विशेष बच्चों को सम्मिलित किया गया है-

1. **स्वलीनता** (Autism)
2. **प्रमस्तकीय पक्षाघात/मस्तिष्क का लकवा** (Cerebral Palsy)
3. **मानसिक मंदता** (Mental Retardation)
4. **बहु विकलांगता** (Multiple Disability)

इस प्रकार के बच्चे बौद्धिक स्तर पर कम होते है। इसलिए सामान्य क्रियाओं को भी कठिनाई से कर पाते है। अतः इनके लिए परामर्श की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती हैं।

परामर्श दाता इन बच्चों के साथ-साथ इनके माता पिता व अभिभावकों को भी प्रशिक्षित करता है। अतः इन सभी लोगों के लिए परामर्शदाता की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है।

3.3.4 संशोधित निःशक्तजन अधिनियम (आर0पी0 डब्लू0डी0 एक्ट) 2016 के अनुसार दिव्यांग/विशेष बच्चों का वर्गीकरण

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अन्तर्गत भारत सरकार ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (दिव्यांगता) को 21 प्रकार में वर्गीकृत कर इनके लिए विशेष प्रयास का शुभारम्भ किया है। अब ऐसे सभी बच्चों को

शामिल किया गया है जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं जेनेटिक स्तर से किसी प्रकार विकृत या असामान्य है। जो क्रमशः इस प्रकार हैः-

1. **मानसिक मंदता-** (Mental Retaradation) बौद्धिक स्तर पर कम, बुद्धि लब्धि का औसतन कमी होना। समझने बोलने में कठिनाई होना अभिव्यक्ति की समस्या का सामना करना इत्यादि लक्षण इनके प्रमुख है।

2. **मानसिक बीमारी-** (Mental Illness) ऐसे बच्चे प्रायः अस्वाभाविक व्यवहार करते है। स्वयं से बाते करते है। बड़-बड़ाते रहते है। भ्रमित स्थिति के साथ साथ मतिभ्रम की दशा में पड़े रहते है। डरें, सहमें व गुमसुम से रहते है।

3. **श्रवण बाधित-** (Hearing Impairment) ऐसे बालक या व्यक्ति कम सुनते है अथवा उँचा सुनते है। बहरेपन के शिकार होते है। वातावरण के सामान्य ध्वनियों के अनुसार क्रिया व्यवहार नहीं कर पाते है।

4. **मूक निःशक्तता-** (Speech Impairment) इनमें वाणी, भाषा तथा सम्प्रेषण के स्तर पर कठिनाई होती है। बोलने में परेशानी व सामान्य बोली से अतिरिक्त बोलते है। जिसे श्रोता समझने में कठिनाई महसूस करते है।

5. **अल्प दृष्टि-** (Low Vision) कम दिखना अर्थात् सामान्य दूरीयों की वस्तुओं को भी देखने में भी कठिनाई का सामना करना। 60 वर्ष की कम आयु में रंगों की पहचान नही कर पाना इत्यादि।

6. **दृष्टि बाधित-** (Blindness) ऐसे बच्चे प्रकाश की दुनिया से दूर होते है अर्थात् दृष्टिहीन होते है। नेत्र सर्जनों द्वारा इन्हें परीक्षण कर वर्गीकृत किया जाता है। ये देखने में कठिनाई महसूस करते है।

7. **स्वलीनता-** (Autism Speetrum/Disorder) अपने आप में खोये रहना। सामाजिकता की दुनिया से दूर स्वयं में लीन रहना। किसी कार्य पर ध्यान केन्द्रित न करना। आंखें मिलाकर बात न करना तथा गुमसुम रहना इस प्रकार के बच्चों की आदत होती है।

8. **प्रमस्तकीय पक्षाघात पोलियों/नर्वइंजरी-** (Cerebral Palsy) ऐसे बच्चे प्रायः चलने फिरने में कठिनाई महसूस करते है। पैरों में जकड़न व ऐठन रहता है। हाथ पैर इत्यादि द्वारा कार्य करने में कठिनाई होती है।

9. **चलन अक्षमता-** (Locomotar Disability) इसमें चलने फिरने की समस्या होती है। हाथ या पैर अथवा दोनों कार्य नही करते है अथवा

इस प्रकार इन बच्चों के लिए शिक्षा, रोजगार सहित सभी बिन्दुओं पर सरकार द्वारा सेवायें प्रदान की जाती है। जिसमें परामर्श भी प्रमुख है ।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

3.3.3 राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (1999) के अनुसार विशेष बच्चों का वर्गीकरण

ऐसे विशेष या दिव्यांग बच्चे जो अक्षमता की दृष्टि से अति गम्भीर या गम्भीर हो। उनके माता-पिता या अभिभावकों को यह चिन्ता होती है कि हमारे न रहने के बाद इन बच्चों का क्या होगा?

ऐसे ज्वलन्त प्रश्नों के निवारणार्थ सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय भारत सरकार ने एक न्यास (Trust) का गठन किया। जिसे राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (1999) कहा जाता है।

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित दिव्यांगजनों या विशेष बच्चों को सम्मिलित किया गया है -

1. स्वलीनता (Autism)
2. प्रमस्तकीय पक्षाघात / मस्तिष्क का लकवा (Cerebral Palsy)
3. **मानसिक मंदता** (Mental Retardation)
4. बहु विकलांगता (Multiple Disability)

इस प्रकार के बच्चे बौद्धिक स्तर पर कम होते हैं। इसलिए सामान्य क्रियाओं को भी कठिनाई से कर पाते हैं। अतः इनके लिए परामर्श की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती हैं।

परामर्श दाता इन बच्चों के साथ-साथ इनके माता पिता व अभिभावकों को भी प्रशिक्षित करता है। अतः इन सभी लोगों के लिए परामर्शदाता की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है।

3.3.4 संशोधित निःशक्तजन अधिनियम (आर0पी0डब्लू0डी0 एक्ट) 2016 के अनुसार दिव्यांग / विशेष बच्चों का वर्गीकरण

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अन्तर्गत भारत सरकार ने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (दिव्यांगता) को 21 प्रकार में वर्गीकृत कर इनके लिए विशेष प्रयास का शुभारम्भ किया है। अब ऐसे सभी बच्चों को

कम कार्य करते है। लकवा मारना, हाथ, पैर इत्यादि का कट जाना, मुड़ जाना टेढ़ा हो जाना इत्यादि।

10. **कुष्ठ रोग से मुक्त-** (Leprosy-Cured) सामान्य बोल चाल की भाषा में इसे कोढ़ भी कहते है। इसमें हाथ पैर या अंगुलियाँ विकृत हो जाती है। टेढ़ापन, दाग, धब्बे शरीर की त्वचाओं एवं माँस-पेशीय का क्षरण इत्यादि होने की दशा का वर्णन इसमें सन्निहित है।

11. **बौना पन-** (Dwarfism) इसमें बच्चें की उम्र चाहे जितनी बढ़ जाये पर शारीरिक कद प्रायः 4 फिट या इससे छोटा ही होता है। बालक जोकर की तरह लगता है।

12. **मॉसपेशी दुर्विकास-** (Muscular Distrophy) मॉसपेशियों में कमजोरी रहती है। व्यक्ति प्रायः बहुत दुबला होता है। मॉसपेशियाँ विकृत भी होती है।

13. **तेजाब हमला पीड़ित-** (Acid Attack Victim) तेजाब या ज्वलनशील पदार्थों का चेहरे या शरीर पर हमला कर विकृत या घायल व्यक्ति इस श्रेणी में रखा गया है। सामान्य रूप से आँख, चेहरा, मुँह व शरीर के अंग सामान्य रूप से प्रभावित रहते है।

14. **विशेष अधिगम अक्षमता-** (Specific Learning Disability) इस प्रकार का बच्चा सीखने में अक्षम होता है। सीखने में समस्या जैसे बोलना सुनना, लिखना, गिनना, भाग, जोड़, ग्राफ इत्यादि में कठिनाई या अक्षमता का सामना करना पड़ता है।

15. **बौद्धिक निःशक्तता-** (Intellectual Disabilities) बुद्धि सम्बन्धी समस्या जिससे संज्ञानात्मक कठिनाई महसूस होती है बौद्धिक अक्षमता के अन्तर्गत आती है। सीखने, समस्या समाधान ताक्रिकता एवं अनुकूलन संबन्धी समस्या प्रमुख है।

16. **मल्टीपल स्केलेरोसिस-** (Multiple Selerosis) इस प्रकार की समस्याग्रस्त बालक या व्यक्ति में दिमाग एवं रीढ़ की हड्डी के समन्वय में परेशानी रहती है।

17. **पार्किसंस रोग-** (Parkinsons Disease) ऐसे बच्चों में तन्त्रिका तन्त्र सम्बन्धित कठिनाईयां व्याप्त होती है। हाथ-पाँव, माँस-पेशियों इत्यादि में जकड़न एवं विकृति होती है।

18. **हिमोफिलिया/अधि रक्तत्राव-** (Haemophilia) ऐसे बच्चों में चोट लगने पर रक्त का देरी से जमना, अत्यधिक खून का बहना, थक्का न जमना इत्यादि समस्यायें पायी जाती है।

19. थेलेसीनिया- (Thalassemia) इस प्रकार की दशाओं में किसी बच्चे या व्यक्ति के खून में हिमोग्लोबीन विकृत हो जाता है। खून शरीर से कम होने लगता है इत्यादि लक्षण मुख्य रूप से देखे गये है।

20. सिकल सैल डिजीज- (Sickle Cell Disease) ऐसे बच्चों या व्यक्ति के शरीर में रक्त (खून) की अत्याधिक कमी हो जाती है जिसे रक्ताल्पता भी कहते है। रक्त की कमी से शरीर के अंग/अवयव खराब व विकृत हो जाते है।

21. **बहु निःशक्तता-** (Multiple Disabilities) जब अक्षमता या दिव्यांगता दो या दो से अधिक स्तर पर किसी बालक या व्यक्ति में पायी जाती है तो वह बहु विकलांगता कहलाती है। उपरोक्त सभी वर्गीकरणों के आधार पर हम दिव्यांग बच्चों अथवा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को परामर्श के द्वारा परामर्शदाता से साक्षात्कार कराते है। जो उनकी आवश्यकताओं, जरूरतों को ध्यान में रखकर सेवायें प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4 - निःशक्त जन अधिनियम 1995 में कितने प्रकार की निःशक्तता है?

....

5 - राष्ट्रीय न्यास अधिनियम किस वर्ष आया?

....

6 - 21 प्रकार की निःशक्तता किस अधिनियम के तहत रखी गई है?

....

3.4 विशेष बच्चों के लिए परामर्शदाता की भूमिका

विशेष शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बच्चों के लिए परामर्श दाता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, ई0जी0विलियमसन (E.G. Williamson)

ने सम्पादित पुस्तक '' निर्देशन के सिद्धान्त'' (Theories of Counselling) में अपने एक लेख में परामर्शदाता की भूमिका का विस्तृत वर्णन किया है। इस पुस्तक का सम्पादन स्टैफलर और ग्रॉट (Buford stefflre and W. Harold Grant) ने किया था। इस पुस्तक में वर्णित परामर्शदाता की भूमिका का संक्षिप्तीकरण निम्न प्रकार से है -

(i) विद्यार्थियों को उनके व्यवहारों में परिवर्तन लाने में सहायता- (To help students in changing their behaviour) परामर्शदाता का उद्देश्य है- विद्यार्थियों को अधिगम द्वारा उनके व्यवहारों में परिवर्तन के लिए सहायता प्रदान करना। विद्यार्थी स्वयं की विशेषताओं, उनकी योग्यताओं, उनकी रूचियों तथा उनके व्यवहारों आदि के बारे में अधिक से अधिक जानना चाहते है। उन्हें यह भी जानना चाहिए कि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार के लिए इन सभी के ज्ञान का क्या महत्व या उपयोग है। प्रार्थी को यह भी जानना चाहिए कि उसके लिए और विकल्पित अवसर (Alternate Opportunities) कौन-कौन से है। प्रार्थी को यह भी जानना आवश्यक है कि समाज क्या कुछ उपलब्ध करवा सकता है, समाज द्वारा लगायी गयी शर्तें, पुरस्कारों की पेशकश तथा उन्हें प्राप्त करने की संभावनाएँ है।

(ii) प्रार्थी को स्वयं को समाज से सम्बद्ध करने के तरीकों का ज्ञान होना चाहिए। उसे यह भी सीखना चाहिए कि उसे क्या निर्णय लेना है, निर्णय कैसे लिए जाते है तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया को किस प्रकार निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया बनाया जाये।

(iii) विद्यार्थियों को उनके व्यवहार में सुधार करने में सहायता (To help the students in modifying their behaviour) परामर्शदाता का उद्देश्य होता है विद्यार्थी को अधिगम (Learning) द्वारा उसके व्यवहार में सुधार लाने में सहायता प्रदान करना। इस दृष्टि से परामर्शदाता का स्वरूप एक अध्यापक का स्वरूप बन जाता है। प्रभावी परामर्श और प्रभावी शिक्षण अध्यापक और विद्यार्थी के बीच व्यक्तिगत सम्बन्ध पर निर्भर करता है। विषय वस्तु (Content) और विधि (Method) दोनों ही परामर्श को प्रभावशाली बनाते है। विषय वस्तु (Content) में एकाकी व्यवहार पद (Single item of behaviour) या कुछ व्यवहार पद शामिल होते है। विषय वस्तु हर व्यक्ति में भिन्न होती है। एक ही व्यक्ति में विषय वस्तु समय समय पर भिन्न भिन्न होती है।

परामर्शदाता और प्रार्थी दोनों ही यह निर्णय लेते है कि कौन सा व्यवहार परिवर्तित करना है और कौन सी विषय वस्तु (Content) सही है। वे यह भी निर्णय ले सकता है कि यह परिवर्तित व्यवहार शैक्षिक या व्यावसायिक निर्णय पर केन्द्रित हों।

(iii) **सूचना एकत्रित करनी और परीक्षण करना (To Assemble and Examine Information)** परामर्शदाता प्रार्थी के साथ मिलकर प्रार्थी और उसके परिवेश (Surroundings) के बारे में सूचनाएँ इक्ट्ठा करते हैं। वे इन सूचनाओं के महत्व और उपयोग के बारे में विचार करते हैं। कुछ को अस्वीकार करते हैं और कुछ का परामर्श सेवा अनुवर्तन (Follow-up) करते हैं। सूचना का प्रत्येक पद कई उपकल्पनाओं का स्रोत (Source) हो सकता है

(iv) **परामर्शदाता द्वारा प्रश्न पूछना (Counsellor Asks Questions)** परामर्शदाता जब उपयुक्त समझता है तभी प्रश्न भी पूछता है। इन प्रश्नों का स्वरूप इस प्रकार का होता है कि प्रार्थी को अच्छी प्रकार समझने में परामर्शदाता सूचना प्राप्त कर सके। ये प्रश्न प्रार्थी द्वारा स्वयं को समझाने की प्रक्रिया को तेज करने की दृष्टि से भी रचे जाते हैं। परामर्शदाता प्रश्नों का प्रयोग बहुत ही सावधानीपूर्वक करें। प्रश्नों का विवेकहीन और अधिक प्रयोग भी कई बार हानिकारक हो सकता है।

(v) **सुझाव देना (To Give Suggestions)** कई बार परामर्शदाता केवल ध्यानपूर्वक सुनता ही है। शेष समय वह प्रार्थी के साथ वार्तालाप करता रहता है। वह सामान्य सुझाव भी देता है। कई बार सामान्य सुझाव परामर्श की प्रारम्भिक अवस्था में ही दिये जाते हैं और विशिष्ट सुझाव (Specific Suggestions) बाद की अवस्था में।

(vi) **प्रार्थी को सूचना उपलब्ध कराना (To Provide Information to Counsellees)** परामर्शदाता भी प्रार्थी को सूचनाएँ उपलब्ध करवाते है। ये सूचनाएँ प्रार्थी के बारे में, सामाजिक वातावरण के बारे में, चयनित (Selected) मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों (Psychological concepts) के बारे में तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया के बारे में। कई बार सूचनाएँ आंकड़ों के रूप में परीक्षण अंकों, स्कूल रिकार्ड या अन्य स्त्रोतों (Sources) से सूचनाएँ प्राप्त की जाती है। कई अवसरों पर परामर्शदाता प्रार्थी द्वारा कही गई बातों में से उसकी भावनाओं,

दृष्टिकोणों और मूल्यों को खोज निकालता है और जो सूचना वह प्रार्थी से प्राप्त करता है, वापिस उसी के सम्मुख प्रस्तुत कर देता है जिसके बारे में प्रार्थी को भी मालूम नहीं होता। नए आंकड़ों के अतिरिक्त, परामर्शदाता उन आंकड़ों को भी संगठित करता है जिसका ज्ञान प्रार्थी को भी होता है।

(vii) **प्रार्थी के बारे में सूचना की व्याख्या (To Interpret the information about the counsellee)** प्रार्थी से सम्बन्धित सूचनाओं की प्रार्थी के सामने परामर्शदाता व्याख्या करता है। निस्सन्देह यह कार्य आंकड़ों को संगठित करने से सम्बन्धित है, लेकिन कई बार यह अलग प्रकार की ही क्रिया होती है क्योंकि इसमें इन सूचनाओं के प्रति प्रार्थी की प्रतिक्रिया की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है।

(viii) **प्रार्थी के सामाजिक वातावरण के बारे में सूचना प्रदान करना (To Provide Information about counselle's Social Environment)** परामर्शदाता प्रार्थी के सामाजिक वातावरण के बारे में भी सूचनाएँ उपलब्ध करवाता है जैसे नौकरियों, स्कूलों, आर्थिक साधनों, सामुदायिक सुविधाओं और सेवाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, उन्नति की दिशाओं या नागरिक उत्तरदायित्वों आदि के बारे में सूचनाएँ। इन सूचनाओं में वर्तमान सामुदायिक दृष्टिकोणों (Prevailing attitudes in the community) सामजिक मूल्यों, दृष्टिकोणों और मूल्यों में हो रहे परिवर्तनों या राष्ट्र के बारे में सूचनाएँ भी शामिल है।

(ix) **मानव-व्यवहार के प्रत्यय के बारे में सूचना प्रदान करना (To Provide Information Regarding Concepts of Human Behaviour)** परामर्श प्रक्रिया में परामर्शदाता बहुत समय तक प्रार्थी को मानव व्यवहार के प्रत्ययों (Concepts of Human Behaviour) के बारे में सूचनाएँ देता रहता है। उदाहरणार्थ - काफी समय तक परामर्शदाता विद्यार्थी के साथ विशेषक (Trait) और कारक (Factor) के संप्रत्ययों के बारे में ही बहस करता रहता है। परामर्शदाता विद्यार्थी को योग्यता और रूचियों में अन्तर स्पष्ट करने में सहायता दे सकता है। वह विद्यार्थी को कुछ ऐसी सूचनाएँ दे सकता है जिससे उन्हें बुद्धि (Intelligence) शैक्षिक योग्यता (Academic ability) यांत्रिक अभिरूचि (Mechanical

Aptitude), क्लर्की की अभिरूचि (Clerical Aptitude) आदि के बारे में स्पष्टता प्राप्त हो।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

(x) **उभयभावी व्यवहार की प्रकृति के बारे में सूचना देना (To Provide Information about the nature of ambivalent behaviour)** परामर्शदाता प्रार्थी को उभयभावी व्यवहार (Ambivalent Behaviour) की प्रकृति के बारे में सूचनाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास कर सकता है। कई विद्यार्थी इस बात से बहुत चिन्तित होते है कि वे उस व्यवसाय का चयन करने के अयोग्य होते है जिसके प्रति वे आकर्षित (Attracted) भी महसूस करते हैं तथा प्रतिकर्षित (Repelled) भी। परामर्शदाता ऐसे प्रार्थियों की सहायता कर सकते है।

(xi) **अन्य मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के बारे में सूचना प्रदान करना (To Provide Information about other psychological Principles)** परामर्शदाता प्रार्थी को अन्य मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के बारे में सूचनाएँ दे सकता है। मनुष्य की द्विलिंगीय (Bisexual) प्रकृति के बारे में दूसरा व्यक्ति कुछ नही समझ पाता तथा यह प्रकृति चिंता का कारण बन जाती है। इन सिद्धान्तों के बारें में सूचना प्रदान करके परामर्शदाता प्रार्थी की सहायता तो कर सकता है लेकिन ऐसी सूचनाओं को अन्य उपलब्ध आंकड़ों से सम्बद्ध करके बड़ी सावधानीपूर्वक व्याख्या करके।

(xii) **निर्णय-प्रक्रिया के बारे में सूचना प्रदान करके (To Provide Information about decision-making process)** परामर्शदाता की भूमिका में प्रार्थी को निर्णय प्रक्रिया के बारे में सूचना प्रदान करना भी शामिल है। वह प्रार्थी के साथ मिलकर अन्य उन निर्णयों की समीक्षा (Review) भी कर सकता है। जिन्हें प्रार्थी ने लिया होता है। वह प्रार्थी को यह बता सकता है कि निर्णय सहज-सहज (Gradually) लिए जाते है। परामर्शदाता प्रार्थी को यह विश्वास दिलाये कि अधिकतर निर्णय उल्टे नही जायेगें।

(xiii) **परामर्शदाता सलाहकार रूप में (Counsellor as an Advisor)** परामर्शदाता सलाहकार रूप में भी कार्य कर सकता है। वह विद्यार्थी को निर्णय लेने में विलम्ब करने अनुमानित निर्णय लेने **(Tentative Decision)** और सूचनाएँ प्राप्त अन्यों के साथ निर्णयों पर बहस

करने या परीक्षण लेने की सलाह दे सकता है। इस प्रकार की सलाह विद्यार्थी को स्वयं निर्णय लेने में सहायता करती है।

(xiv) **दूसरों के साथ परामर्शदाता का वार्तालाप (Conversation of counsellors with others)** प्रार्थी के साथ वार्तालाप के अतिरिक्त, परामर्शदाता अन्य व्यक्तियों के साथ गोपनीय ढंग से वर्तालाप कर सकता है। यह वार्तालाप का ही अंग होगा। परामर्शदाता माता पिता, अध्यापकों, नियुक्तिकर्ताओं या मित्रों के साथ बातचीत कर सकता है। यह गोपनीय बातचीत इस उद्देश्य से की जाती है ताकि प्रार्थी के साथ प्रभावशाली ढ़ंग से कार्य किया जा सके।

(xv) **प्रार्थी के बारे में सूचना एकत्रित करना (To Assemble Information about the Counsellee)** प्रार्थी के बारे में अन्य व्यक्तियों से सूचना प्राप्त करने के अतिरिक्त परामर्शदाता भी प्रार्थी के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए उत्तरदायी है। परामर्शदाता प्रार्थी को मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि दे सकता है तथा अन्य लोगों के पास भेज सकता है जो ऐसे परीक्षण देते है और परीक्षणों आदि के अंकों का रिकार्ड इक्ट्ठा किया जाता है। परामर्शदाता स्कूल, स्वास्थ्य, कार्य रिकार्ड की तथा प्रार्थी के बारे में अन्य सूचनाओं की जांच करता है।

विशिष्ट समस्याओं वाले बालकों के निर्देशन एवं परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उसे न केवल ऐसे बालक वरन् उसके माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के सलाहकार की भूमिका निभानी पड़ती है। इन बालकों को निर्देशन एवं परामर्श के उद्दश्यों की चर्चा हमने पिछले खण्ड में की है अतः परमर्शदाता को इन बालकों ने आत्मविश्वास एवं अपने प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए। जिससे उनकी आत्मदया एवं आत्महीनता की भावना को कम करके सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जा सके। परामर्शदाता को इस बात के लिए सतर्क रहना आवश्यक है कि ऐसे बालकों को सलाह देते समय उनका सम्पूर्ण विश्वास अर्जित करना सफल परामर्श की पहली आवश्यकता है। अतः उसे बालकों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना एवं उन्हें उचित सम्मान देना चाहिए। इन बालकों को परामर्श देते समय कुछ ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित है -

- विशिष्ट बालकों की समस्याओं को समझने में उनकी सहायता करना तथा उनके प्रति भेदभाव रहित बर्ताव।
- माता-पिता के साथ पूर्ण सहयोग एवं परामर्श क्रिया में उन्हें शामिल करना। उपरोक्त सभी तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि विशेष बच्चों के संदर्भ में परामर्शदाता की भूमिका उनके सम्पूर्ण विकास की आधार शिला है।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

7 - निर्देशन के सिद्धान्त पुस्तक के लेखक है?

....

8 - सूचना का प्रत्येक पद कई का स्रोत हो सकता है, वह है।

....

9 - परामर्शदाता की भूमिका उनके सम्पूर्ण विकास की क्या है?

....

10 - यान्त्रिक अभिरूचि सम्बन्धित है।

....

3.5 सारांश

इस इकाई में हमने सर्वप्रथम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विषय में चर्चा किया। साथ ही विभिन्न अधिनियमों के तहत आने वाले विशेष बच्चों के विषय में भी ज्ञान प्राप्त किया। दिव्यांगता के आधार पर अक्षम बच्चों को विभिन्न वर्गो में बाँटा गया है।

इन सभी वर्गों के बच्चों के लिए एक परामर्शदाता की भूमिका का क्या उल्लेख है? इसका विस्तृत अध्ययन इस इकाई में हुआ है। परामर्शदाता के कार्यो उत्तर दायित्वों को क्रमशः इस अध्याय में वर्णित किया गया है। परामर्शदाता ही इन बच्चों के आवश्यकताओं व जरूरतों को बखुबी समझता है। वह बच्चों के साथ साथ इनके अभिभावकों को भी जागरूक एवं प्रशिक्षित करता है। विशेष बच्चों की कार्य क्षमताओं एवं उपलब्धियों के आधार पर शिक्षण प्रशिक्षण के क्रिया विधियों का वर्णन इस इकाई में उल्लेखित है।

3.6 अभ्यास कार्य

1. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विषय में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
2. प्रतिभावान बालकों की क्या विशेषताएँ होती है।
3. पिछड़े बालकों से क्या तात्पर्य है।
4. नि:शक्तजन अधिनियम 1995 के अनुसार दिव्यांगजनों को किन–किन वर्गो में विभाजित किया गया है? नामाल्लेख करे।
5. राष्ट्रीय न्यास में अन्तर्गत किस प्रकार के बच्चों को शामिल किया गया है ?
6. आर0पी0डब्लू0डी0एक्ट के अनुसार कितने प्रकार के दिव्यांग बच्चों को सम्मिलित किया गया है।
7. विशेष बच्चों के लिए परामर्श दाता की भूमिका पर एक निबन्ध लिखें।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. **विशेष बालक**
2. **विशेष शिक्षा**
3. **प्रतिभा सम्पन्नता, मंद बुद्धि**
4. 7 प्रकार
5. 1999 ई0
6. **R.P.W.D.Act 2016**

7. **E.G Williamson**

8. उपकल्पानाओं

9. आधारशिला

10. यन्त्र, मशीनरी व कल-पूर्जों से।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के निर्देशन व परामर्श में परामर्शदाता की भूमिका

3.8 उपयोगी पुस्तकें

- शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श : **डॉ0एस0सी0 ओवरॉय**
- एजुकेशन आफ इक्ससेप्शनल चिल्ड्रेन : **के0 सी0 पण्डा**
- भारत सरकार का राजपत्र, नि:शक्तता के परिप्रेक्ष्य में 1995 व 2016
- पुनर्वास के आयाम : **डॉ0 आर0 ए0 जोसेफ**

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed-SE-101
निर्देशन एवं परामर्श

खण्ड
2
आत्मछवि और आत्मसम्मान का विकास/प्रवर्धन

इकाई –4 53–60

स्व की अवधारणा : मानव और उसके भावों की समझ और परिवर्तन

इकाई –5 61–68

व्यक्तित्व विकास और स्वायत्तता की वृद्धि

इकाई –6 69–76

बच्चों के आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक की भूमिका

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रो0 के0 एन0 सिंह	कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 पी 0के 0पाण्डेय	प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 के0 एस0 मिश्रा	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 पी0 के0 साहू	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 कल्पलता पाण्डेय	अचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी	सहायक-आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ0 दिनेश सिंह	सहायक-आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

श्री दिलीप कुमार दीक्षित	समन्वयक सह प्रवक्ता, पूर्वांचल खादी ग्रामोद्योग, विकास समिति झूँसी, प्रयागराज (इकाई 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9)

सम्पादक

प्रो0 धनञ्जय यादव	आचार्य एवं विभागध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद़्यालय, प्रयागराज

परिमापक

प्रो0 पी 0के0 पाण्डेय	प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

समन्वयक

डॉ. नीता मिश्रा	परामर्शदाता, (विशेष शिक्षा, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

© उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज 2020

ISBN- 978–93–83328–96–3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को राजर्षि अण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में, मिमियोग्राफी (वक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
नोट : पाठय सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आकड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय, उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन – उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज– 211021

आत्मछवि और आत्मसम्मान का विकास

खण्ड परिचय–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही अपने सारे अन्त:क्रियाओं का सम्पादन करता है। बच्चे ही भविष्य के नागरिक है। अत: उनकी छवि एवं सम्मान को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है। जब बच्चों को सम्मान मिलता है तो उन्हें आन्तरिक खुशी मिलती है। यह खुशी ही इन्हें विकास के पथ पर अग्रसर करती है। इस प्रकार इनकी आत्मछवि एवं आत्मसम्मान में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। ये बच्चे समाज की मुख्य धारा में सफलता पूर्वक समायोजित हो जाते है।

इस खण्ड के अन्तर्गत तीन इकाईयाँ है, जो क्रमश: इस प्रकार है –

इकाई चार स्व की अवधारणा को व्याख्यायित करते हुए मानव और उसके भावनाओं को वर्णित करता है। भावों में परिवर्तन को भी प्रदर्शित करता है।

इकाई पाँच में बालक या व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास को निरूपित किया गया है। इसमें स्वायत्तता की वृद्धि की क्या भूमिका है? इत्यादि का वर्णन किया गया है। इकाई छ: में बच्चों के आत्मसम्मान के विकास में शिक्षक की भूमिका पर चर्चा किया गया है।

प्रस्तुत खण्ड में उपरोक्त सभी तथ्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। जिसके ज्ञान एवं उपयोग को हम सभी पाठकगण अपने जीवन में आत्मसम्मान करते है।

इकाई –4

स्व की अवधारणा: मानव और उसके भावों की समझ और परिवर्तन

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 स्व की अवधारणा (आत्म अवधारणा)

4.4 मानव और उसके भावों की समझ

4.5 परिवर्तन

4.6 सारांश

4.7 अभ्यास कार्य

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.9 उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के लिए हर कदम पर आवश्यक एवं महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। परामर्श प्रक्रिया इसी शिक्षा के अन्दर शामिल है। परामर्शदाता बच्चों एवं मानव व्यवहार को समझता है। उसके अनुरूप अपने कार्यो को सम्पादित करता है।

परामर्शप्रार्थी परामर्श प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यदि वह अपने आप को स्वयं से समझने का प्रयास करता है तो इस अवधारणा को आत्म अवधारणा या स्व प्रत्यय की संज्ञा दी जाती है। इस गुण में बालक अपने विषय में चिन्तन एवं मनन करता है। स्वयं को जानने का प्रयास करना। अपनी क्षमता, रूची एवं शक्तियों के अनुसार आत्म निर्धारण एवं लक्ष्यों की प्राप्ति करना इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है।

आत्मज्ञान एवं आत्मशक्तियों का ज्ञान रखते हुए ही एक परामर्शदाता निर्देशन व परामर्श प्रक्रिया को सकुशल सम्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त मानव और उसके भावों की पहचान, समझ एवं उपयोगिता, सामाजिक संदर्भो में विशेष योगदान रखती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही रहकर समस्त अन्त:क्रियाओं को सम्पादित करता है। वह सहृदय होने के कारण उसके अन्त:स्थल में कुछ विशेष भाव भी होते है। जिसके द्वारा मानवीय सम्बन्धों

की व्याख्या करते हुए प्रत्येक भावों का समय, देश काल व परिस्थिति जन्य प्रयोग भी होता है। इसलिए इनका इस संदर्भ में विशेष योगदान है।

मानव के भावों में कभी-कभी बदलाव व परिवर्तन की भी स्पष्ट झलक मिलती है। इसलिए इन परिवर्तित भावों एवं विचारों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

भाव विचार हृदय में उद्वेग है जो समयानुसार व कालक्रमिक परिवर्तित एवं गत्यात्मक होते है। जिसका अध्ययन सुव्यवस्थित ढंग से किया गया है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगें कि

- आत्म अवधारणा अथवा स्व प्रत्यय कि संकल्पना को समझ सकते हैं।
- स्वयं के विषय में जानना एक महत्वपूर्ण व सार्थक प्रयास है जिसके बारे में श्रोता/पाठकगण ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- मानव के हृदय के उद्गार एवं उसमें निहित भावों की समझ पैदा कर सकने में समर्थ हो सकेंगे।
- मानव व उसके भावों में परिवर्तन की कलाओं का ज्ञान भी इस खण्ड द्वारा प्राप्त हो सकेगा।
- सामाजिक संदर्भो में भाव विचार एवं प्रत्याशाओं का ज्ञान इस इकाई के अन्तर्गत हम प्राप्त कर सकते है।

4.3 स्व की अवधारणा/आत्म अवधारणा

स्व की अवधारणा या आत्मप्रत्यय का तात्पर्य अपने को जानना है। अपने स्वयं को जानने अथवा चरम तक पहुंचने से है। 6 माह की आयु तक बालक अपने विषय में कुछ न कुछ प्रत्यय बना लेता है। यद्यापि वह उसे भाषा द्वारा प्रकट नही कर सकता। वह अपने शरीर में विभिन्न अंगों से खेलता है और दर्पण में अपने को देखकर संतोष प्राप्त करता है। वह अपनी प्रशंसा करता है। अपने आप पर ही मुस्कुराती है। क्रमशः सिखाने में वह अपने विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों को और शरीर के अंगो को अलग-अलग पहचानने लगता है। ढ़ाई वर्ष की आयु में वह गुड़ियों के शरीर के अंगों को भी पहचान सकता है।

टर्मन के अनुसार - तीन वर्ष का बालक अपना नाम बता सकता है। वह लिंग भेद लड़का या लड़की इत्यादि समझने लगता है। 3-4 वर्ष की आयु के बालक अपनी ओर अधिक ध्यान देते है। छोटी लड़कियाँ अपनी माता

की तरह श्रृंगार करना चाहती है। शीशे में अपने को देखकर खुश होती है। चार वर्ष की आयु में बालक अपने को अन्य बालकों से अलग व्यक्ति के रूप में पहचानने लगता है। एक ओर वह अपने शरीर, रूप, रंग, इत्यादि का प्रत्यय बना लेता है। दूसरी ओर अपनी आन्तरिक अनुभूतियों, अभिवृत्तियों और विचारों के विषय में प्रत्यय बना लेता है। ये उसके आन्तरिक एवं बाहय जीवन से सम्बन्धित होते है। कभी-कभी बालक अपने अहमं के दोनों भागों में अन्तर नही कर पाता है। वह नही जान पाता है कि यह स्वप्न है या यथार्थ। धीरे-धीरे उम्र बढ़ने के साथ वह वास्तविक जगत में प्रवेश करता है और उसके आत्म अवधारणाओं में भी विकास होने लगता है।

विकास के बाद वह इस आत्मकेन्द्रित स्थिति से सामाजिक प्राणी की स्थिति पर पहुंचता है। जिसमें उसके स्व के दोनों रूप मिलकर एक हो जाते है।

दूसरे शब्दों में आत्म अवधारणा से तात्पर्य अपने स्वयं के बारे में जानने व समझने से है। इसके 2 पक्ष है 1. शारीरिक पक्ष 2. मनोवैज्ञानिक या वांछित गुणों का पक्ष।

जॉन टर्नर द्वारा विकसित आत्म वर्गीकरण सिद्धान्त स्वयं अवधारणा में कम से कम दो ‘‘ स्तर ’’ के होते है।

1. व्यक्तिगत पहचान 2. सामाजिक अस्तित्व

इस प्रकार आत्म अवधारणा मूल्यांकन आत्म विचारों और अनुभवों पर निर्भर करता है।

बोध प्र'u

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 - आत्म अवधारणा से क्या तात्पर्य है?

....

2 - जान टर्नर से आत्म वर्गीकरण सिद्धान्त में स्वयं अवधारणा को कितने स्तर में विभाजित किया है?

....

3 - आत्म अवधारणा के कौन-कौन से पक्ष है?

....

4.4 मानव और उसके भावों की समझ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही उसे सम्पूर्ण क्रिया कलाप एवं कार्य व्यवहार करने होते है। इसलिए वह यहां अनेकों प्रकार के स्थितियों-परिस्थितियों से अपने भाव-विचार इत्यादि द्वारा समायोजन पर जोर देता है।

वह आत्मकेन्द्रित से जनकल्याणार्थ तक उन्मुख होता है। प्राणीयों में प्रेम सद्भावना, सहयोग इत्यादि के द्वारा एक सभ्य एवं सुन्दर समाज की निर्मित पर जोर देता है।

इसलिए मनुष्य को एक सहृदय प्राणी की संज्ञा दी गयी है। उसके हृदय में अनेक भावनायें जन्म लेती है जिसके आधार पर वह परिस्थितियों के अनुसार संसार में व्यवहार करता है। उदाहरणतया जब मनुष्य प्रेम वश किसी जानवर या प्राणी को स्पर्श करता है तो वह भी उसी अनुकूल प्रतिक्रिया करता है।

प्रेम, दया, करूणा, क्रोध, उत्साह, घृणा इत्यादि कुछ विशेष भाव है जिनका प्रयोग मनुष्य परिस्थितिजन्य करता है।

इसलिए ये सभी भाव मानव जीवन व समाज के लिए बहुत उपयोगी है। मानवीय संदर्भ में भाव 2 प्रकार के होते हैः-

1. **प्रकट भाव-** जब भाव कुछ लक्षणों द्वारा प्रकट होता है तो उसे प्रकट भाव कहा जाता है। जैसे मालिक द्वारा प्रेम व भोजन दिये जाने पर कुत्ता दुम हिलाता हुआ उसके पास बैठ जाता है। यहां कुत्ते का प्रकटीकरण भाव है।
2. **अप्रकट भाव-** अप्रकट भाव का अर्थ होता है भाव का होना, किन्तु किसी दूसरे के समक्ष उसका प्रदर्शन नही होना जैसे प्रशिक्षणकर्ता अपने प्रशिक्षणर्थियों से लगाव व स्नेह रखता है किन्तु सीखने-सीखाने की अवधि में व तटस्थ होकर अपने भावों को प्रकट नही करता है।

जब कोई मानव किसी प्रकार के भावों का अनुभव करता है तो वह इन्हे 8 प्रकार से व्यक्त कर सकता है -

1. स्तम्भित होना
2. पसीना आना
3. रोमांचित होना

4. गला रूंधना
5. कम्पन्न होना
6. पीला पड़ना
7. आँखों से अश्रु बहना
8. मुर्छित हो जाना

इस प्रकार मनोवैज्ञनिकता का दृष्टि से मैक्डूगल ने 14 उद्वेग माने है। जो मनुष्यों में जीवन पर्यन्त विद्यमान रहते है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4 – मनुष्य किस प्रकार का प्राणी है?

....

5 – मानवीय सन्दर्भ में भाव कितने प्रकार के होते हैं?

....

6 – मनुष्य परिस्थितियों के अनुसार संसार मे क्या करते है?

....

7 – मैक्डूगल ने उद्यागों की संख्या कितनी मानी है?

....

4.5 परिवर्तन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। भाव, उद्वेग, विचार ये सभी मानव हृदय के उद्‌गार है। जो समय-समय पर प्रस्फुटित एवं परिवर्तित होते रहते है। माननीय संदर्भो में ये भावों का परिवर्तन एक प्राकृतिक प्रक्रिया होने के साथ-साथ वातावरणिक भी माना गया है। बदलाव के द्वारा ही अच्छी चीजों को प्राप्त किया जाता है। यह सनातन काल से चली आ रही परम्परा है। जो मानव को परिस्थितियों के अनुसार क्रिया व्यवहार करने का कला सीखाती

है। जीवन के हर सम-विषम झंझावातों में समाजोपयोगी व मर्यादित आचरण करने का पाठ सिखाती है।

उदाहरण के तौर पर यदि हमारे घर में शादी का खुशनुमा माहौल है। लोग नाच-गाने एवं खुशियाँ मना रहे हो और उसी समय पड़ोस में किसी की मृत्यु हो जाय तो वहां मानवीय भाव बदल जाते है। हँसी खुशी का माहौल रखने वाले प्राणी भी मृत्यु के इस अवसर पर गमगीन परिवार वालों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते है। जिसके कारण वहां भावों का परिवर्तन व सिमितता स्पष्ट दिखलायी पड़ती है।

दूसरे शब्दों में मानव के अन्दर निहित भाव-विचार इत्यादि परिवर्तन शील होते है। जिस प्रकार छोटा बच्चा अपने माता पिता की अनुपस्थिति में भावुक एवं रूदन करता है। वही माता पिता का मिठाइयों, खिलौनों इत्यादि के साथ वापसी पर वहीं बालक खुशी एवं प्रसन्न होकर सकारात्मक क्रियायें करने लगता है। ये सभी उदाहरण भावों के परिवर्तन की स्थिति को दर्शातें है।

भाव साम्यता की स्थिति में बालकों का तटस्थ रहना दिखता है। वे प्रायः उदासीन निर्लिप्त एवं अनमने से रहते है। विशेष शिक्षा व विशेष बच्चों के संदर्भ में भावों का विशेष महत्व है क्योंकि ऐसे बच्चे बहुत भावुक होते है।

विशेष बच्चों को भावनात्मक सहयोग एवं प्रकटीकरण द्वारा ही परिवर्तित कर वांछित क्रियाओं की तरफ उन्मुख किया जाता है। इसलिए इनके संदर्भ में भावों का परिवर्तन विशेष योगदान प्रदान करता है।

इतिहास गवाह रहा है कि भाव परिवर्तन के माध्यम से ही अनेक प्रकार के सृजन व विध्वंस हुए है। जैसे महाभारत के युद्ध में अपने सगे सम्बन्धियों को देखकर अर्जुन का विषाद की स्थिति में पहुंचना। श्रीकृष्ण जी द्वारा उन्हें गीता के उपदेश के माध्यम से पुनः कर्तव्य पथ पर लाना और युद्ध करने के लिए तैयार करना। भाव परिवर्तन का सबसे अच्छा उदाहरण है।

कलिंग नर संहार के समय सम्राट अशोक का हिंसा से हृदय परिवर्तन होना, अहिंसा एवं बुद्ध धर्म की ओर अग्रसर होना भाव परिवर्तन का सबसे प्रमाणिक उदाहरण है।

इसी प्रकार मानवीय परिप्रेक्ष्य व विशेष बच्चों के लिए भी प्रस्फुटित भाव परिवर्तन शील व गत्यात्मक होते है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के क्षेत्र में यदि हम किसी बालक को उसकी गलतियों पर डाँटे फटकारे व दण्डित करें तो नकारात्मक पक्ष के रूप में वह कक्षा से **(Drop out)** बाहर होता जाता है। बार-बार ऐसा करने पर वह अध्यापक के विषय में नकारात्मक भावों को अपने मानस पटल पर अंकित कर लेता है।

इसी के विपरीत यदि शिक्षक किसी बालक को अभिप्रेरित **(Mativation)** करता है तो वह सकारात्मक पक्ष की तरफ अग्रसर होता है। बेहतर परिणाम देने का शत प्रतिशत प्रयास करता है। इसलिए दण्ड एवं पुरस्कार का भाव परिवर्तन में अपना विशेष महत्व होता है।

इस प्रकार परिवर्तन मानवीय धरातल पर भावात्मक रूप से प्रभावी व सशवन्त साधन है जो सभी प्रकार के बदलावों को जन्म देती है।

4.6 सारांश

इस इकाई में हमने स्व प्रत्यय की अवधारणा को भलीभांति जानने का प्रयास किया। आत्मज्ञान अथवा आत्म अवधारणा में अहम् की मुख्य भूमिका व उत्तरदायित्व है। इसे जानने का प्रयास किया। इस प्रकार आत्मिक ज्ञान एवं मूल्यों की पहचान ही मानव जीवन को सफलता की तरफ अग्रसर करती है। आगे की कड़ी में हमने मानव और उसके भावों का अध्ययन किया जो व्यावहारिक एवं सिद्धान्तिक धरातल पर मानवीय जीवन के सफल संदेशों की व्याख्या करती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही अपनी समस्त क्रियाओं का सम्पादन करता है। इसलिए उसके भावों का भी समाज में महत्वपूर्ण योगदान है। एक सभ्य व सुन्दर समाज की निर्मित में मानव व उसके भाव महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। मानव हृदय के उद्गार विभिन्न परिस्थितियों में एक जैसे नही रहते है। इनमें उतार चढ़ाव होते रहते है। इसलिए जीवन में सम्पूर्ण आयामों में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भाव-विचार वास्तविक एवं काल्पनिक धरातल पर परिवर्तित होते रहे है ये परिवर्तन ही नये सृजनशीलता एवं विकास का घोतक रहा है। यद्यापि ये भाव बिलुप्त एवं प्रकट होते रहते है। इसलिए ये कुछ न कुछ संदेश एवं व्याख्या करके ही जाते है।

उपरोक्त सभी तथ्यों के आधार पर हमने आत्म अवधारणा की पहचान, मानवीय भावों की समझ एवं उसका कालक्रमिक परिवर्तन इस इकाई के अन्तर्गत विस्तृत रूप से अध्ययन किया। जो हमारे भावी जीवन के लिए लाभदायक है।

4.7 अभ्यास कार्य

1. स्व प्रत्यय/आत्म अवधारणा के विषय में आप क्या जानते है? विस्तार से चर्चा करें।
2. मानवीय मूल्य व मानव भावों में अन्तर बताइये।
3. मानव और उसके भाव किस रूप में व्यावहारिक जीवन को प्रभावित करते है? विस्तार पूर्वक व्याख्या करे।
4. परिवर्तन प्रकृति का नियम है? टिप्पणी लिखें।
5. भावों का परिवर्तन किस रूप में मानव जीवन को प्रभावित करता है? निबन्धात्मक लेख लिखें।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1- स्वयं को जानना

2- दो स्तर 1. व्यक्तिगत पहचान 2. सामाजिक अस्तित्व

3- दो 1. शारीरिक पक्ष, 2. मनोवैज्ञानिक पक्ष

4- सामाजिक

5- दो 1. प्रकट 2. अप्रकट

6- समायोजन

7- 14

4.9 उपयोगी पुस्तकें

➢ निर्देशन एवं परामर्शन : **ए0 राय एवं मधु अस्थाना**
➢ सूर्या यू0जी0सी0 शिक्षा शास्त्र : **डॉ0 बी0एल0शर्मा व डॉ0 आर0एन0सक्सेना**
➢ An Introduction to Guidance : **Crow & Crow**

इकाई -5

व्यक्तित्व विकास और स्वायत्तता की वृद्धि

संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 व्यक्तित्व विकास

5.3.1 व्यक्तित्व

5.3.2 परिभाषा

5.3.3 व्यक्तित्व विकास का स्वरूप

5.4 स्वायत्तता

5.5 स्वायत्तता का विकास

5.6 सारांश

5.7 अभ्यास कार्य

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.9 उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

प्राय: हम किसी को देखकर आकलन कर लेते है कि अमुक व्यक्ति बहुत सज्जन है। अथवा बहुत क्रोधी है। व्यक्ति का गुण उसके व्यक्तित्व में झलकता है। जीवन के हर मोड़ पर व्यक्ति का गुण उसकी सफलता का माध्यम बनता है। इसलिए मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान में व्यक्तित्व (Personality) काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

व्यक्तित्व के साथ-साथ किसी व्यक्ति या संस्था की स्वायत्तता भी विशेष स्थान रखती है। स्वायत्तता (Autonomy) से तात्पर्य उसकी स्वतन्त्र शक्ति या स्वयं के साम्राज्य से है। इसमें अपने आप की शक्ति एवं उसके प्रभाव द्वारा किसी भी कार्य को उसके दायरे में रहकर स्वतन्त्र सम्पादित करने से है। इस प्रकार किसी भी कार्य की सफलता उसके व्यक्तित्व और

स्वायत्तता का सम्मिश्रण होता है। जिसके द्वारा इस क्रियाओं को पूर्ण रूपेण सफल बनाया जाता है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगें कि-

- व्यक्तित्व विकास के बारे में जानकारी कर सकते है।
- किन परिस्थितियों में किस प्रकार का व्यवहार व्यक्तित्व को किस तरह प्रभावित करेगा इत्यादि का ज्ञान रखा जा सकता है।
- व्यक्तित्व एवं उसकी परिभाषा का अध्ययन किया जा सकता है।
- व्यक्तित्व विकास के स्वरूप के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकते है।
- इन सभी तथ्यों के साथ स्वायत्तता के विषय में बेहतर ढंग से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- स्वायत्तता के विकास के बारे में विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

5.3 व्यक्तित्व विकास (Personality Development)

5.3.1 व्यक्तित्व (Personality)

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन (ग्रीक) भाषा के शब्द से हुई है। जिसका पोस्टम अर्थ है 'नकाब' या 'मुखौटा' जो चेहरे के लिए प्रयुक्त होता है। जिसे पात्र नाटक खेलते समय धारण करते है। इस पोशाक एवं चेहरे से रोमन नाटककारों के पार्ट के चरित्र का बोध होता है। पोशाक एवं चेहरे की भिन्नता चरित्र की भिन्नता का बोध कराती है।

जन साधारण में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के बाह्य रूप से लगाया जाता है। मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के रूप एवं गुणों की समष्टि से है। दर्शन में व्यक्तित्व का आन्तरिक तत्व जीव माना जाता है। व्यक्तित्व कोई स्थिर अवस्था न होकर एक गतिशील समष्टि है। जो पर्यावरण के प्रभाव से बराबर बदलती रहती है।

5.3.2 परिभाषा

1. **बोरिंग के अनुसार-** '' व्यक्ति के अपने वातावरण के साथ अपूर्ण एवं स्थायी समायोजन के योग को व्यक्तित्व कहते है।''

2. **मन–** के शब्दों में '' व्यक्तित्व की परिभाषा एक व्यक्ति के ढाँचें, व्यवहार के रूपों, रूचियों, अभिवृत्तियों, सामर्थ्यों, योग्यताओं और अभिरूचि के सबसे अधिक लाक्षणिक संकल्प के रूप में की जा सकती है।''

3. **बारेन के अनुसार–** '' व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।

4. **आलपोर्ट के अनुसार** – '' व्यक्तित्व व्यक्ति के मनोदैहिक गुणों का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के प्रति होने वाले उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।''

इस प्रकार से व्यक्तित्व '' जीवित रहने के अपने प्रयत्नों में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा ग्रहण किये हुए अनुकूलन का विशेष रूप है।''

इस प्रकार उपरोक्त सभी विद्वानों ने व्यक्तित्व को अपने अपने दृष्टिकोण से व्याख्यायित किया है जो अवलोकनीय है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 – व्यक्तित्व (Personality) शब्द की उत्पत्ति किस भाषा से हुआ है?

....

2– ''व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ अपूर्ण एवं स्थायी समायोजन व्यक्तित्व है।'' किसने कहा था?

....

3 – मुखौटा या (Mask) किसे सम्बन्धित है?

....

5.3.3 व्यक्तित्व विकास के स्वरूप

हर मनुष्य का अपना-अपना व्यक्तित्व है। वही मनुष्य की पहचान है कोटि-कोटि मनुष्यों की भीड़ में भी वह अपने निराले व्यक्तित्व के कारण

पहचान लिया जायेगा। यही उसकी विशेषता है। यही उसका व्यक्तित्व है। प्रकृति का यह नियम है कि मनुष्य की आकृति दूसरे से भिन्न है। आकृति का यह जन्मजात भेद आकृति तक ही सीमित नहीं हैं उसके स्वभाव, संस्कार और उसकी प्रवृत्तियों में भी वही असमानता रहती है।

इस असमानता में ही सृष्टि का सौन्दर्य है। प्रकृति हर पल अपने को नये रूप में सजाती है। हम इस प्रतिपल होने वाले परिवर्तन को उसी तरह नही देख सकते जिस तरह हम एक गुलाब के फूल में और दूसरे में कोई अन्तर नही कर सकते। परिचित वस्तुओं में ही हम इस भेद की पहचान आसानी से कर सकते है। परिचित वस्तुओं में ही हम इस भेद की पहचान आसानी से कर सकते है। यह हमारी दृष्टि का दोष है कि हमारी आंखें सूक्ष्म भेद को और प्रकृति के सूक्ष्म परिवर्तनों को नहीं परख पातीं। मनुष्य चरित्र को परखना भी बड़ा कठिन कार्य है, किन्तु असम्भव नही है। कठिन वह केवल इसलिए नही है कि उसमें विविध तत्वों का मिश्रण है बल्कि इसलिए भी है कि नित्य नई परिस्थितियों के आघात-प्रतिघात से वह बदलता रहता है। वह चेतन वस्तु है। परिवर्तन उसका स्वभाव है। प्रयोगशाला की परीक्षण नली में रखकर उसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता। उसके विश्लेषण का प्रयत्न सदियों से हो रहा है। हजारों वर्ष पहले हमारे विचारकों ने उसका विश्लेषण किया था। आज के मनोवैज्ञानिक भी इसी में लगे हुए है। फिर भी यह नही कह सकते कि मनुष्य चरित्र का कोई भी संतोषजनक विश्लेषण हो सका है।

हर बालक अनगढ़ पत्थर की तरह होता है जिसमें कोई न कोई सुन्दर मूर्ति छिपी है जिसे शिल्पी की आँख देख पाती है। वह उसे तराश कर सुन्दर मूर्ति में बदल सकता है। क्योंकि मूर्ति पहले से ही पत्थर में मौजूद होती है शिल्पी तो बस उस फालतू पत्थर को जिसमें मूर्ति ढ़की होती है एक तरफ कर देता है और सुन्दर मूर्ति प्रकट हो जाती है। माता पिता शिक्षक और समाज बालक को इसी प्रकार सँवार कर खूबसूरत व्यक्तित्व प्रदान करते है।

व्यक्तित्व विकास में वंशानुक्रम (Heredity) तथा परिवेश (Environment) दो प्रधान तत्व महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है। परिवेश उसे इन शाक्तियों को सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। ज्यों ज्यों बालक विकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात् कर लेता है, जिसमें वह बड़ा होता है, व्यक्तित्व पर गहरी छाप छोड़ते है।

जिस प्रकार कुम्हार कच्ची मिट्टी को गढ़ कर जो स्वरूप देना चाहता है आकार प्रदान करता है उसी प्रकार व्यक्तित्व विकास में भी अभिप्रेरक अपने कौशलों द्वारा बालकों को अच्छे व्यक्तित्व एवं गुणों की तरफ उन्मुख करता है। अतः व्यक्तित्व विकास में सम्पूर्ण टीम मिलकर किसी भी बालक को मनोवांछित गुणों एवं स्वरूपों की तरफ अग्रसर करती है।

किसी बालक या व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसकी पहचान है। मूर्तिकार एवं कुम्हार जिस तरह थोड़े से प्रयास से मूर्ति पत्थर या मिट्टी को जो चाहे रूप दे सकता है इसी तरह शिक्षक एवं परामर्शदाता सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशेष बच्चों को भी एक आदर्श नागरिक बनाकर समाज का उपयोगी सदस्य बनाता है।

इसलिए व्यक्तित्व विकास का स्वरूप क्रमशः कई चरणों से गुजरता हुआ अपनी पूर्णता को प्राप्त करता है। विभिन्न व्यक्तित्व के प्रकार जैसे एस्थेनिक एथलेटिक, पिकनिक इत्यादि के साथ-साथ अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी व्यक्तित्व के बालकों की अपनी विशेषता एवं पहचान होती है। आवश्यकतानुसार इनकों परामर्शदाता अभिप्रेरित कर इनकी क्षमता के अनुसार दिशा एवं दशा प्रदान करता है।

किसी भी बालक का व्यक्तित्व विकास उसके आनुवंशिकता एवं वातावरण का समिश्रण होता है। जो उन्हें विकास या विनाश के पथ पर अग्रसर करता है।

5.4 स्वायत्त्ता

स्वायत्तता का तात्पर्य अपनी स्वयं की शक्ति एवं अधिकार का होना है इसमें स्वयं की सत्ता एवं स्वामित्व होता है।

दर्शन शास्त्र के अनुसार स्वायत्तता उस शक्ति को कहते है। जिसमें किसी को अपना स्वयं पर फैसला या निर्णय लेगे का अधिकार प्राप्त होता है।

इस प्रकार देश में कुछ स्वायत्व संगठन अथवा संस्थाओं की स्वतन्त्र व स्वयंशास्त्री है। जैसे तेजी से विकास लक्ष्य हासिल करने के लिए कुछ कालेजों को वित्तीय व प्रशासनिक मामलों में स्वायत्तता प्रदान की गयी है।

दूसरे शब्दों में किसी बालक की स्वायत्तता से अभिप्राय उसे दूसरों के हस्तक्षेप के बिना स्वयं के फेसले लेने की शक्ति एवं निर्णय स्वायत्तता के रूप में जानी जाती है।

उदाहरण के लिए, व्यक्तित्वत वयस्कों के मामले में, एक स्वायत्व व्यक्ति वह होता है जो अपनी तरफ से तर्क संगत और सूचित निर्णय करने मे सक्षम होता है। लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि वह घर समाज कानून व अभिभावकों की अवहेलना करे। किसी भी बालक या व्यक्ति की आत्मनिर्भरता के लिए यह एक प्रभावी व सशक्त उपागम है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4– स्वयं की शक्ति एवं अधिकार क्या कहलाता है?

....

5– दर्शनशास्त्र के अनुसार स्वायत्तता किस प्रकार की शक्ति है?

....

6– किसी बालक या व्यक्ति में स्वायत्ता एक प्रभावी व सशक्त क्या है?

....

5.5 स्वायत्तता का विकास/वृद्धि

स्वायत्तता किसी भी बालक या व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मनुष्य में इसका विकास एक क्रमिक एवं नियोजित चरणों में सम्पन्न होता है। यह मानवीय मूल्य एवं धरातल पर उदात्त रूप से परिलक्षित होता है।

जिस प्रकार वृद्धि एवं विकास एक मनोवैज्ञानिक गुणों से युक्त एक प्रक्रिया है। ठीक उसी प्रकार स्वायत्तता भी एक व्यवस्थित व सुनियोजित तरीके से विकासमान है। किसी बालक के स्वयं के विकास में ये सहायक तत्व माने गये है। बालकों में आत्मछवि एवं आत्मसम्मान के रूप में यह गत्यात्मक स्वरूप देने वाला प्रमुख अवयव के रूप में विद्यमान रहता है जिस प्रकार वृद्धि एवं विकास निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है ठीक उसी प्रकार यह भी विकासोन्मुखी प्रक्रिया है जो मानव को उसके लक्ष्य एवं आदर्शो तक पहुचांने में सहायक होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में स्वायत्तता की वृद्धि बदले, सन्दर्भो, मायनों व भूमिकाओं में सबसे महत्वपूर्ण बात है, शिक्षक और शिक्षार्थी की स्वायतता सीखने-सीखाने की प्रक्रिया तभी लचीली और सन्दर्भ परक होगी जब शिक्षार्थी इसके लिए स्वायत्ता होगा अतः स्वायत्तता की वृद्धि ही बालकों को सिखने की तरफ उन्मुख करती है। इसकी वृद्धि ही किसी बालक को आत्मसम्मान प्राप्त करने का हकदार बनाती है इसके विकास के कुछ महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार है-

- यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
- यह बालकों को स्वयं से अपने सामर्थ्य के अनुसार कार्य करने पर बल डालता है।
- जटिल प्रक्रिया होते हुए भी बालक के स्वाभिमान व आत्मसम्मान पर केन्द्रित होता है।
- यह सरलता से जटिलता की तरफ बढ़ता है।
- सीखें हुए ज्ञात ज्ञान को आधार बनाकर लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

7 - वृद्धि एवं विकास किस प्रकार के गुण हैं?

....

8 - स्वायतत्ता की वृद्धि बालक को क्या प्राप्त करने का हकदार बनाती है?

....

5.6 सारांश

इस इकाई में हमने आत्मछवि और आत्मसम्मान के प्रवर्धन के स्वरूप का अध्ययन किया। जिसमें मनोवैज्ञानिक तत्व, व्यक्तित्व विकास की परिकल्पना का ज्ञान प्राप्त किया। व्यक्तित्व किस प्रकार शिक्षण अधिगम एवं परामर्श को प्रभावित करता है।

इसका अध्ययन करते हुए हमने स्वायत्तता के विषय में जानकारी प्राप्त की। किसी व्यक्ति, संगठन व समाज में स्वायत्तता किस अर्थ तक प्रभावी है। यह मानवीय जीवन व मूल्यों के साथ-साथ बालक के विकास में किस स्तर तक उपयोगी है। इस इकाई में हमने स्वायत्तता विकास एवं उसके कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का भी अध्ययन किया है। परामर्श व निर्देशन की प्रक्रिया में परामर्शदाता के लिए किसी बालक का व्यक्तित्व एवं स्वायत्तता ही केन्द्र बिन्दु होता है। इसी के आधार पर शिक्षण प्रशिक्षण की दिशा भी तय की जाती है।

5.7 अभ्यास कार्य

1. आत्म छवि के स्वरूप के संदर्भ में व्यक्तित्व को परिभाषित करे।
2. आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व की परिभाषा दीजिए।
3. व्यक्तित्व विकास के स्वरूप पर एक निबन्धात्मक लेख लिखें।
4. स्वायत्तता विकास को विस्तृत रूप व्याख्यायित करें।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1- ग्रीक (Latin) भाषा

2- बोरिंग

3- व्यक्तित्व से

4- स्वायत्तता

5- स्वयं का फैसला, निर्णय लेने की शक्ति

6- उपागम

7- मनोवैज्ञानिक गुण

8- आत्मसम्मान

5.9 उपयोगी पुस्तकें

➢ शिक्षा मनोविज्ञान
: डॉ0ए0के0सिंह
➢ Status Report's of Cconomical Stages
: Government of India 2011
➢ दैनिक भास्कर काम 1 अप्रैल 2018
➢ A.I.I.S.H. Mysore Journals, Volume2, 2010-11

इकाई -6

बच्चों के आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक की भूमिका

संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 आत्म सम्मान

6.4 बच्चों में आत्म सम्मान का विकास

6.5 शिक्षक की भूमिका

6.6 सारांश

6.7 अभ्यास कार्य

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.9 उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

परामर्श व निर्देशन के क्षेत्र में आत्म सम्मान वह कड़ी है जो विद्यार्थी एवं शिक्षक को एक साथ जोड़ते हुए एक प्रभावी शिक्षण की तरफ उन्मुख करती है। सम्मान किसको प्रिय नही होती है। मनुष्य समाज में सम्मान प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण क्रियाओं का आयोजन करता है। यह तब प्रभावी व सुखदायक हो जाता है, जब उसका आन्तरिक हृदय आत्म सम्मान की सुखद अनुभूति करता है। इस प्रकार आत्म सम्मान व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शिक्षक समाज का पथ प्रदर्शक एवं मार्गदर्शक होता है। माता पिता के बाद शिक्षक की भूमिका ही सबसे प्रभावी व महत्वपूर्ण मानी गयी है। अतः शिक्षक हमारे समाज के लिए एक महत्वपूर्ण पद है। जिसका जितना भी वर्णन किया जाय वह कम ही होगा।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप यह जान सकने में समर्थ होगें कि-

- व्यक्ति के जीवन में आत्म सम्मान का क्या महत्व है? और यह किस प्रकार अधिगम को प्रभावित करता है।

- आत्म सम्मान के स्वरूपों एवं विकास की स्थिति का अध्ययन करेगें।
- शिक्षक का समाज में क्या महत्व है का अध्ययन इस इकाई में कर सकते है।
- आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक बच्चों के लिए किस प्रकार उपयोगी एवं लाभदायक होता है। शिक्षक की भूमिका क्या है? इत्यादि का अध्ययन किया जायेगा।

6.3 आत्म सम्मान Self - Esteem

आत्म सम्मान एक सफल सुखी जीवन का आधारभूत तत्व है। व्यक्ति आत्मसम्मान के अभाव में सफल तो हो सकता है, बाह्य उपलब्धियों से युक्त भी हो सकता है। किन्तु वह अन्दर से सुखी, संतुष्ट और संतृप्त होगा यह सम्भव नही है।

आत्म सम्मान के अभाव में जीवन एक अपूर्ण रिक्त एवं गहरी कमी का अहसास कराता है।

'' आत्म सम्मान स्वयं की सहज स्वीकृति, स्व प्रेम व स्व सम्मान की व्यक्तिगत अनुभूति है जो दूसरों की प्रशंसा, निन्दा और मूल्यांकन आदि से स्वतंत्र है।''

दूसरे शब्दों में ''आत्म सम्मान आपके बारे में अपने बारे में सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है।''

6.4 बच्चों में आत्म सम्मान का विकास

आत्म सम्मान ही किसी बालक को सफलता की तरफ उन्मुख करता है। एक बच्चे का आत्म सम्मान उसके माता-पिता, शिक्षकों, कोच, भाई-बहनों और साथियों से प्रभावित होता है। जब कोई बालक अच्छा काम करता है तो सब उसकी तारीफ करते हैं उस अवस्था में बालक अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता है तथा आत्म सम्मान की प्राप्ति करता है।

जब बच्चों में आत्म सम्मान उच्च होता है तो वह सकारात्मक निर्णय एवं कार्य करते है। खुद को और बेहतर बनाने का प्रयास करते है। तथा विकास के पथ पर अग्रसर रहते है। इस प्रकार वह अपने लक्ष्यों की

शत्प्रतिशत प्राप्ति में सफल होते है। अतः आत्म सम्मान ही इनके लिए सफलता का साधन सिद्ध होता है।

बच्चों के आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक की भूमिका

विशेष बच्चों के संदर्भ में तो यह और भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसे बच्चे सभी ज्ञानेन्द्रियों से पूर्ण नही होते हैं। ऐसे में उन्हें सहानुभूति की आवश्यकता होती है। ये बालक अपने हम उम्र के अन्य बच्चों से पिछड़ जाते है। इसलिए आत्मसम्मान ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा इनमें सकारात्मकता का भाव जगाकर समाज में उपयोगी सदस्य बनाया जा सकता है। विशेष बच्चों के संदर्भ में आत्म सम्मान उनकी सफलता का सबसे बड़ा मूल मंत्र है। कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान देने की जरूरत है जो बच्चों के आत्मविश्वास व आत्मसम्मान के विकास में मदद करता है।

1. बच्चों के साथ कभी भी बहुत सख्ती से पेश न आये।
2. बच्चों को अकेले में समझायें व बतलायें।
3. बच्चों को दूसरे के सामने डांटे नही।
4. दोस्तों से मिलने में बंदिशें न लगायें।
5. बच्चों के लिए रोल मॉडल बनिये और उन्हें अच्छी सीख दीजिए।
6. बच्चों के लिए सकारात्मक महौल बनाइये।

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर हम किसी बालक के आत्मसम्मान में वृद्धि कर सकते है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 – आत्म सम्मान स्वयं की सहज स्वीकृति, स्वप्रेम व स्वसम्मान की व्यक्तिगत क्या है ?

....

2– बालको में सकारात्मक भाव जगाकर उन्हें क्या बनाया जा सकता है ?

....

6.5 शिक्षक की भूमिका Role of Teacher

बच्चों के आत्म सम्मान के विकास में अध्यापक एक सकारात्मक उत्प्रेरक की तरह होता है जो उसकी उर्जा एवं गति को लक्ष्यों की तरफ उन्मुख करता है। यदि बात विशेष बच्चों के संदर्भ में करें तो यह और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। विशेष बालकों के लिए शिक्षक एक अभिप्रेरक एवं मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। यह बालकों में शिक्षा द्वारा मानवीय संसाधनों का उत्थान, देश विकास, समाज का आदर्श नागरिक, व्यावसायिक कौशल एवं चरित्रवान बनाने वाले गुणों का विकास करता है। दिव्यांग बच्चों के माता पिता में सकारात्मक सोच एवं उर्जा जगाकर ऐसे बालकों को सफलता पूर्वक समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य शिक्षक ही करता है। शिक्षक जिस भी क्षेत्र में निपुण या विशेषज्ञ है, बच्चों को समाज का उत्पादक सदस्य ही बनाने पर पूरा ध्यान केन्द्रित करता है। इस प्रकार वह बालकों का सर्वांगीण विकास करके उन्हें स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बनाता है।

बच्चों के लिए शिक्षक के कार्यों, जिम्मेदारियों व भूमिकाओं का वर्णन स्पष्ट रूप से किया गया है।

शिक्षकों का अहम ध्येय युवा मस्तिष्क को तेजस्वी बनाना है। तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में सबसे सशक्त संसाधन है। शिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है जिसके जरिये लोग जीवन की उंचाइयों को छूते है लेकिन सीढ़ी वहीं की वहीं रहती है। सांप और सीढ़ी की खेल की भांति सीढ़ी एक व्यक्ति को सांपों के लोक तक पहुंचा सकती है। और असीमित सफलताओं की दुनिया तक भी। ऐसा उदार है इस पेशे का स्वभाव हमारे समाज में और एक बच्चे के जीवन में एक शिक्षक का स्थान माता-पिता के बाद लेकिन ईश्वर से पहले आता है। माता-पिता, गुरू और फिर ईश्वर ऐसी महत्ता मेरी जानकारी में दुनिया में किसी और पेशे की नही हैं कि वह समाज के लिए शिक्षक से बढ़कर महत्वपूर्ण हो।

शिक्षक खासकर स्कूली शिक्षक के सामने व्यक्ति के जीवन को संवारने की भारी जिम्मेदारी होती है। बचपन ही वह आधारशिला है जिस पर जीवन की इमारत खड़ी होती है। जैसा बीज बचपन में बोया जाता है वैसा ही

जीवन के वृक्ष में फल लगता है। इसलिए बचपन में दी जाने वाली शिक्षा कालेज या यूनिर्वसिटी में दी जाने वाली शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण होती है।

बच्चों के आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक की भूमिका

शिक्षक का ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को रोपना होना चाहिए जिससे कि उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि हो। वे उनमें वह आत्मविश्वास पैदा करे कि छात्र कल्पनाशील और सृजनशील बन सके। इस रूप मे छात्रों का विकास ही उन्हे भविष्य की चुनौतियों का सामना करते हुए प्रतिस्पर्धा में उतारेगा। सामान्य प्रक्रिया में शिक्षक कुछेक सर्वोत्तम परिणाम देने वाले छात्रों की ओर आकर्षित होते है तथा और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते रहते है। इसके विपरीत एक शिक्षक की अहम भूमिका यह है कि वह उन विद्यार्थियों की ओर ध्यान केन्द्रित करे जो पढ़ने में कमजोर है तथा उनमें बेहतर समझदारी एवं सीखने की प्रवृत्ति विकसित करने का प्रयास करे। ऐसा शिक्षक ही वास्तविक गुरू होता है। हमारे देश के एक महान नेता थे भीमराव अम्बेडकर अम्बेडकर के नाम का महत्व पूरे नाम भीमराव अम्बेडकर में निहित है। भीमराव अछूत कही जाने वाली एक जाति के विद्यार्थी थे तथा अम्बेडकर उनके उच्चवर्ण के ब्राम्हण शिक्षक शिक्षक अम्बेडकर अपने विद्यार्थी भीमराव का बहुत ध्यान रखते थे। वह न सिर्फ अपने विद्यार्थी को अपना ज्ञान देते थे अपितु खाने के लिए अपने भोजन का एक हिस्सा भी उसे दे देते थे। पढ़ाई समाप्त करने के बाद जब भीमराव बैस्टिर बने तो अपने उस गुरू को याद रखने के लिए अपना नाम बदलकर भीमराव अम्बेडकर रख लिया। शिक्षक के गुण महान शिक्षक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधा कृष्ण शिक्षकों को सलाह देते थे कि हमें सतत् बौद्धिक निष्ठा एवं सार्वभौम करूणा की खोज में रहना चाहिए। ये दोनों गुण किसी सच्चे शिक्षक की पहचान है। एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। शिक्षक को जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। उसे शिक्षण और बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करे कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें। ज्ञान प्राप्ति के लिए चिंतन एवं कल्पना की

स्वतंत्रता आवश्यक है और इसके लिए शिक्षक को उपर्युक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए। शिक्षक रोड माडल होता है। वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है बल्कि हमारे जीवन को संवारते समय महान सपने और उद्देश्य होते है। दूसरी बात यह कि शिक्षा एवं ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें इस आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो कि दृढ़तापूर्व सारी बाधाओं को पार कर एक रूप रेखा, एक उत्पाद प्रणाली का विकास कर सके। एक शिक्षक का जीवन कई दीपों को प्रज्जवलित करना है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी :

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

4 – अध्यापक किस प्रकार का उत्प्रेरक होता है?

....

5 – दिव्यांग बालकों को समाज की किस धारा से जोड़ा जाता है?

....

6 – शिक्षक बालकों का किस प्रकार का विकास चाहता है?

....

6.6 सारांश

आज हर व्यक्ति सभी भौतिक सुखसम्पदा से युक्त है। फिर भी उसे संतोष एवं खुशी की तलाश है। यह तलाश जब उसका हृदय स्वयं से पूरा कर देता है तो उसे हृदय से आत्म संतोष व आत्मसम्मान की प्राप्ति होती है। यह आत्मसम्मान किसी बाजार में नही मिलता बल्कि यह उस व्यक्ति या बालक की मन स्थिति है।

इसलिए हर व्यक्ति या बालक के लिए आत्मसम्मान एक सुखद अनुभूति है। इसी आत्मसम्मान को जगाने व बढ़ाने का कार्य एक शिक्षक उत्प्रेरक के रूप में करता है। शिक्षक समाज का पथ प्रदर्शक, मार्गदर्शन होता है। इसलिए उसके दिखाये मार्ग पर बालक चलकर अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करता है। बालकों में मूल्यों नैतिकता एवं आदर्श का भाव शिक्षक ही भरता है। शिक्षक की भूमिका एवं महत्व का जितना भी वर्णन किया जाये वह कम ही होगा। माता-पिता के बाद बालक के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण शिक्षक ही होता है। इसलिए शिक्षक को ईश्वर से भी बड़ा बताया गया है।

अतः किसी बालक के आत्मछवि एवं आत्म सम्मान के विकास में शिक्षक एक महानायक की तरह है जो बालक की जीवन धारा को बदल देता है। अतः शिक्षक को बालक का सकारात्मक उत्प्रेरक, प्रवर्धक एवं सृजन कर्ता कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

6.7 अभ्यास कार्य

1. आत्म सम्मान पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखे।
2. आत्म छवि एवं आत्म सम्मान (सम्मान) में कोई एक अन्तर बताइये।
3. आत्म सम्मान के विकास का स्वरूप क्या है।
4. किसी बालक के विकास में शिक्षक की क्या भूमिका है विस्तार से वर्णन करे।
5. शिक्षक किसी बालक के आत्म सम्मान के विकास में उत्प्रेरक है चर्चा करें।

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1- अनूभूति

2- समाज का उत्पादक सदस्य

3- सकारात्मक

4- मुख्य धारा

5– सर्वांगीण विकास

6– शिक्षक

6.9 उपयोगी पुस्तकें

- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान : एस0पी0गुप्ता
- Guidance and Counselling : एस0के0कोचर
- Educational and Vocational Guidance in India **:**

  K.P. Pandey

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed-SE-101
निर्देशन एवं परामर्श

खण्ड

3

समावेशित शिक्षा में निर्देशन और परामर्श

इकाई -7 81-94

परामर्श के प्रकार : बाल केन्द्रित, सहयोगात्मक परिवार और निर्देशन औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में।

इकाई -8 95-106

समूह निर्देशनः समूह नेतृत्व, तरीकें और समूह प्रक्रियायें।

इकाई -9 107-112

समूह निर्देशन में चुनौतियाँ

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रो0 के0 एन0 सिंह	कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 पी 0के 0पाण्डेय	प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 के0 एस0 मिश्रा	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 पी0 के0 साहू	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 कल्पलता पाण्डेय	अचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी	सहायक-आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ0 दिनेश सिंह	सहायक-आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

श्री दिलीप कुमार दीक्षित	समन्वयक सह प्रवक्ता, पूर्वांचल खादी ग्रामोद्योग, विकास समिति झूँसी, प्रयागराज (इकाई 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9)

सम्पादक

प्रो0 धनञ्जय यादव	आचार्य एवं विभागध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

परिमापक

प्रो0 पी 0के0 पाण्डेय	प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

समन्वयक

डॉ. नीता मिश्रा	परामर्शदाता, (विशेष शिक्षा, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

© उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज 2020

ISBN- 978–93–83328–96–3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को राजर्षि अण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में, मिमियोग्राफी (वक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

नोट : पाठय सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आकड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय, उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन – उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज– 211021

समावेशित शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श

खण्ड परिचय–

खण्ड तीन का शीर्षक है ''समावेशित शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श।'' इस खण्ड के अन्तर्गत भी तीन इकाईयाँ है जो क्रमशः इकाई सात, आठ एवं नौ के रूप में विभक्त की गयी है।

इकाई सात में परामर्श के प्रकार के बारे में बताया गया है। जिसमें बाल केन्द्रित, सहयोगात्मक व परिवार के साथ-साथ, औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन की चर्चा की गयी है।

इकाई आठ में समूह निर्देशन के बारे में बताया गया है जिसमें समूह नेतृत्व, तरीके और समूह प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है।

इकाई नौ से समूह निर्देशन में चुनौतियों के बारे में जिक्र किया गया है। ये चुनौतियाँ किस स्तर तक समावेशित शिक्षा को प्रभावित कर रही है। समावेशित शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श का योगदान एवं उसके महत्व का वर्णन इन इकाईयों के माध्यम से किया गया है।

इकाई -7

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 समावेशित शिक्षा : अर्थ एवं परिभाषा

7.4 समावेशित शिक्षा के लाभ

7.5 परामर्श के प्रकार

7.5.1 निर्देशीय परामर्श

7.5.2 अनिर्देशीय परामर्श

7.5.3 समन्वित परामर्श

7.5.4 कुछ विशेष परामर्श

7.6 औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

7.7 सारांश

7.8 अभ्यास कार्य

7.9 बोध प्रश्नों का उत्तर

7.10 उपयोगी पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

परामर्श एवं निर्देशन सभी प्रकार के बच्चों एवं व्यक्तियों के लिए आवश्यक है। जीवन के हर एक मोड़ पर एक ऐसा समय आता है जहां हमें किसी सहारे सहयोग एवं दिशा निर्देश की आवश्यकता पड़ती है। तब इस आवश्यकता को परामर्श एवं निर्देशन एवं परामर्शदाता इसलिए हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है।

यद्यपि विशेष बच्चों के संदर्भ में बात होती है तो यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। समय के अनुसार विशेष बच्चों व सामान्य बच्चों में भेद-भाव नही किया जा रहा है। यह बच्चे भी अब हमारे समाज के अंग है। अतः इनके लिए समावेशित विद्यालय में समावेशित शिक्षा प्रदान करना सरकार की पहली प्राथमिकता है। जो इनके समानता के अधिकार एवं

शिक्षा अधिनियमों की उपयोगिता को क्रियान्वित करती है। समावेशित शिक्षा में परामर्श की क्या उपयोगिता है। इसके विभिन्न प्रकारों की भी चर्चा की गयी है। बालक या परामर्श प्रार्थी को केन्द्र में रखकर दी गयी परामर्श सेवा सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावी होती है। इस प्रकार समावेशन एवं परामर्श प्रक्रिया में सहयोगात्मक परामर्श एवं परिवार की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। किन परिस्थितियों में निर्देशन प्रभावी होता है इसका भी अध्ययन करना बहुत आवश्यक है।

अतः इस इकाई के अन्तर्गत उपरोक्त सभी तथ्यों पर विस्तार से चर्चा किया गया है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप यह जानने में समर्थ हो सकेंगे कि

- समावेशित शिक्षा की अवधारणा क्या है?
- समावेशित शिक्षा की परिभाषा एवं उसके लाभ के बारें में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- परामर्श के विभिन्न प्रकारों के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- परामर्श के कुछ महत्वपूर्ण प्रकारों के बारे में जैसे-बालकेन्द्रित परामर्श, परिवार इत्यादि के बारे में जानकारी कर सकेंगे।
- औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन के महत्व को जान सकेंगे।

7.3 समावेशित शिक्षा (Inclusive Education) अर्थ एवं परिभाषा

समावेशित शिक्षा का आन्दोलन सभी नागारिकों की समानता के अधिकार को पहचानने और सभी बालकों को समावेशी आवश्यकताओं के साथ-साथ शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने से है। **''समावेशित शिक्षा वह शिक्षा है जहां विशेष आवश्यकता वाले बालकों (दिव्यांगजनों) को सामान्य बालकों के साथ एक स्थान पर सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था प्रदान की जाती है।''** इस व्यवस्था में किसी जाति, धर्म, भाषा, प्रान्त , वर्ग एवं स्थान इत्यादि का विभेद नही किया गया है। सभी बच्चों को एक साथ एक छत के नीचे एक शिक्षक एक पाठ्यक्रम की संरचना के आधार पर प्रदान की जाती है।

$$\text{सामान्य बालक+दिव्यांग बालक} = \xrightarrow[\text{एक पाठ्यक्रम}]{\text{एक स्थान}} = \text{समावेशित शिक्षा}$$

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

इस प्रकार समावेशित शिक्षा में सामान्य बालकों के साथ किसी भी प्रकार के अक्षम बालक जैसे श्रवण अक्षमता दृष्टि अक्षमता मानसिक मंद, शारीरिक अक्षम इत्यादि बच्चों को बिना किसी भेद भाव के एक शिक्षक एक विद्यालय एक पाठ्यक्रम की शिक्षा प्रदान करना है।

इससे बच्चों के बीच दूरियाँ कम होती है सब एक साथ मिल-जुल कर पढ़ते है और आगे बढ़ते है। ''विशेष बच्चों को बिना किसी प्रशिक्षण के एक ही छत के नीचे सामान्य विद्यालय में सामान्य बच्चों के साथ जोड़कर शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया समावेशित शिक्षा कहलाती है।''

इस प्रकार समावेशित का तात्पर्य मिल-जुल कर पढ़ना व आगे बढ़ना बिना किसी भेद भाव से है। दूसरे शब्दों में '' समावेशित शिक्षा वह शिक्षा होती है। जिनके द्वारा विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मंद बुद्धि, दृष्टि अक्षम, पिछड़े बालक एवं प्रतिभाशाली इत्यादि सभी प्रकार के बच्चों को सामान्य विद्यालय में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्रदान की जाती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 - दिवयांग बालकों व समान्य बालकों को एक साथ पढाने की शिक्षा व्यवस्था क्या कहलाती है?

....

2 - विशेष बालक से क्या तात्पर्य है ?

....

7.4 समावेशित शिक्षा के लाभ

समावेशित शिक्षा के निम्नलिखित लाभ है-

- समावेशित शिक्षा एक ऐसा प्रारूप है, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बालको को समान शिक्षा का अवसर प्राप्त होता है।

- समावेशित शिक्षा में सामान्य बालकों एवं दिव्यांग बालकों के मध्य एक स्वस्थ्य भेद भाव रहित सामाजिक सम्बन्ध बनता है।
- यह शिक्षा व्यवस्था सभी प्रकार के बालकों को उनके व्यक्तिगत अधिकारों के रूप में स्वीकार करता है।
- समावेशित शिक्षा अध्यापकों, बालकों शिक्षक के साथ -साथ माता-पिता एवं अभिभावकों के सामूहिक प्रयास पर आधारित है।
- समावेशित शिक्षा शिक्षण के अवसर एवं समानता का अधिकार प्रदान करती है। जो अभी तक दिव्यांगजनों को प्राप्त नही था।
- सभी प्रकार के बच्चों के सर्वांगिण विकास पर बल देते हुए दिव्यांग बच्चों को समाज की मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य करती है।

7.5 परामर्श के प्रकार (Types of Counselling)

समावेशित शिक्षा के संदर्भ में परामर्श एक मजबूत प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से हमें सभी कठिन परिस्थितियों में समाधान पाने का मार्ग मिलता है। परामर्श में **1.** प्रार्थी केन्द्र बिन्दु होता है। **2.** परामर्श भी इस प्रक्रिया केन्द्र बिन्दु होता है। परामर्श दाता भी इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन दोनों के आधार पर परामर्श निम्नलिखित प्रकार के होते है।

7.5.1 निर्देशीय परामर्श (Directive Counselling)

इस प्रकार का परामर्श परामर्शदाता केन्द्रित होता है अर्थात इस प्रक्रिया में, परामर्शदाता को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है तथा परामर्शदाता अपना ध्यान समस्या पर अधिक रखता है, व्यक्ति पर नहीं। इस प्रक्रिया में पूर्व निर्धारित योजना के आधार पर समस्या की व्याख्या विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर की जाती है तथा ऐसा करने में परामर्शदाता, परामर्शप्रार्थी की सहायता एवं उसे सहयोग प्रदान करता है। निर्देशीय परामर्श साक्षात्कार एवं प्रश्नावली पद्धति से दिया जाता है। विली (Willy) तथा एण्डू (Andrew) ने निर्देशीय परामर्श के निम्नलिखित आधार माने है-

(i) परामर्शदाता अधिक योग्य, प्रशिक्षित, अनुभवी एवं ज्ञानी होता है। फलतः समस्या समाधान के सम्बन्ध में अच्छी राय दे सकता है।

(ii) परामर्श एक बौद्धिक प्रक्रिया है।

(iii) पूर्वाग्रह एवं सूचनाओं के अभाव में परामर्शप्रार्थी समस्या का समाधान नही कर पाता है।

(iv) परामर्श के उद्देश्य समस्या-समाधान अवस्था माध्यम से निर्धारित किये जाते है।

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

इस प्रकार परामर्शदाता, परामर्श प्रक्रिया में प्रमुख स्थान रखते हुए महत्वपूर्ण कार्य करते हैं तथा परामर्श देने में अनेक कदम उठाते है। विलियमसन (Williamson) तथा डार्ले (Darley) ने निम्नलिखित सोपानों का उल्लेख किया है-

(i) विभिन्न विधियों तथा परीक्षणों के माध्यम से सूचनायें संग्रहीत कर उनका विश्लेषण करना।

(ii) सूचनाओं का यान्त्रिक तथा आकृतिक संगठन करके उनका संश्लेषण करना।

(iii) छात्र की समस्या के कारणों को ज्ञात करके उनका निदान करना।

(iv) परामर्श या उपचार।

(v) मूल्यांकन या अनुगमन

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3 – निर्देशीय परामर्श में परामर्श केन्द्रित होता है?

....

4– परामर्श एक प्रक्रिया है।

....

7.5.2 अनिर्देशीय परामर्श (Non- Directive Counselling)

अनिर्देशीय परामर्श प्रार्थी केन्द्रित होता है। अनिर्देशीय परामर्श के जन्मदाता रोजर्स (Rogers) माने जाते है। रोजर्स के मतानुसार-

निर्देशीय परामर्श अमनोवैज्ञानिक तथा प्रभावहीन है क्योंकि निर्देशन का केन्द्रबिन्दु व्यक्ति होता है न कि समस्या इस प्रकार के परामर्श में परामर्शदाता

सेवार्थी को अपनी बातें कहने के लिए प्रोत्साहित करता है। सेवार्थी के निर्णयों को उसका मूल्य समझना चाहिए और उसे विधेयात्मक सहमति देना चाहिए। जिससे वह अपने अनुभवों एवं अभिव्यक्ति को सामान्यीकृत कर सके और उसमें समायोजन एवं परिपक्वता का विकास हो सके।

अनिर्देशीय परामर्श में परामर्शदाता की क्रियायें महत्वपूर्ण नही होती है। ध्यान, सेवार्थी (Client) की क्रियाओं पर दिया जाता है। अनिर्देशीय परामर्श में रोग का निदान आवश्यक नही है क्योंकि इसमें प्रार्थी से सम्बन्धित पिछली सूचना एकत्रित नही की जाती है और न किसी प्रकार का परीक्षण (Testing) ही होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

5 – प्रार्थी केन्द्रित परामर्श कौन सा है ?

....

6 – अनिर्देशीय परामर्श में परामर्शदाता नहीं होता है।

....

7.5.3 समन्वित परामर्श (Eclectic Counselling)

इस प्रकार का परामर्श न तो पूर्णतया निर्देशीय है और न अनिर्देशीय वरन् यह मध्यवर्गीय है। यह दोनों प्रकार के परामर्श के मिश्रित सिद्धान्तों पर आधारित है। इस प्रकार का परामर्श, परामर्शप्रार्थी की आवश्यकताओं तथा अपनी परिस्थितियों दोनो का ही अध्ययन करता है। यह दोनों की कुछ–कुछ बातें अपनाकर चलता है।

निर्देशीय एवं अनिर्देशीय परामर्श में अन्तर–

निर्देशीय एवं अनिर्देशीय परामर्श का उद्देश्य एवं ध्येय एक ही होता है। परन्तु उसे प्राप्त करने के रास्ते अलग अलग है। परामर्श का एक साधन निर्देशीय है तो दूसरा अनिर्देशीय अर्थात अन्तर केवल साधन के स्वरूप में है

उद्देश्य में नही साधन के वाह्य स्वरूप में अन्तर भी केवल सुविधा असुविधा की दृष्टि से है। इस प्रकार इन दोनों में निम्नलिखित अन्तर है:-

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

(i) अनिर्देशीय परामर्श के अनुसार मानव में विकास की अगाध शक्ति निहित होती है इसी कारण व्यक्ति अपने वातावरण में समायोजन स्थापित कर पाता है परन्तु वे निहित शक्तियाँ अज्ञात एवं प्रयोगहीन होती है। निर्देशीय परामर्श इस सिद्धान्त को स्वीकार नही करता है। वह कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपना स्वयं का अध्ययन निष्पक्ष नही कर सकता है। अतएव पक्षपातहीन अध्ययन के लिए परामर्शदाता की आवश्यकता पड़ती है।

(ii) निर्देशीय परामर्श में भावात्मक पहलू को, जबकि अनिर्देशीय परामर्श में बौद्धिक पहलू को अधिक महत्व दिया जाता है।

अनिर्देशीय परामर्शदाता का प्रमुख कार्य परामर्श प्रार्थी की भावात्मक अभिरूचि का अध्ययन करना है। प्रार्थी अपने भाव समस्या इत्यादि का वर्णन साहित्यिक भाषा में कर सकता है पर निर्देशीय परामर्शदाता का इससे कोई सरोकार नही होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

7 – वह परामर्श जो पूर्णतया मध्यवर्गीय या मिश्रित हो कहलाता है।

....

8 – निर्देशीय परामर्श में किस पहलू पर महत्व दिया जाता है ?

....

9 – परामर्श में समास्याओं का क्या किया जाता है ?

....

7.5.4 कुछ विशेष परामर्श

शिक्षा एवं परामर्श के क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण परामर्श इस प्रकार है। जो निम्नलिखित रूप से प्रदर्शित किये गये है-

1. **शैक्षिक परामर्श** **(Education Counselling)** शैक्षिक परामर्श का सम्बन्ध विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम के निर्णय के बारे में सहायता प्रदान करने से है। विभिन्न अभिरूचियों, विभिन्न क्षमताओं और प्राकृतिक झुकावों या प्रवृत्तियों के कारण तथा इनके संदर्भ में विद्यार्थियों की सहायता शैक्षिक परामर्श द्वारा की जा सकती है। संक्षेप में यह व्यक्ति की शिक्षा संबंधी समस्याओं में सहायता करती है।

2. **व्यावसायिक परामर्श** **(Vocational Counselling)** व्यावसायिक परामर्श वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति उपयुक्त व्यवसाय के चयन में उसके लिए तैयारी में सहायता की जाती है। व्यवसाय सम्बन्धी निर्णय कि प्रकृति बहुत गंभीर मामला होता है अतः इसमें विशेष ध्यान देने की जरूरत है। वरना कुसमायोजन और प्रसन्नता इसके परिणाम हो सकते है।

3. **व्यक्तित्व परामर्श** **(Personality Counselling)** व्यक्तित्व या मनोवैज्ञानिक परामर्श के अन्तर्गत व्यक्तिगत और संवेगात्मक समस्याओं का समाधान व्यक्तित्व परामर्श का कार्यक्षेत्र है। उदाहरणार्थ मित्रों का अभाव, अकेलापन, हीनता की भावनाएँ आदि। इन समस्याओं की ओर ध्यान देना अति आवश्यक है वरना इनका प्रभाव विद्यार्थी की स्कूल शिक्षा पर अवश्य पड़ेगा। इस प्रकार के परामर्श के अभाव में विचलित अप्रसन्न और असमायोजित मानसिक स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

   ''मनोवैज्ञानिक परामर्श'' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम आर0डब्ल्यू0 व्हाईट **(R.W. White)** ने किया था। मनोवैज्ञानिक परामर्श में, परामर्शदाता एक चिकित्सक के समान होता है। इसमें सामान्य बातचीत के माध्यम से परामर्शदाता प्रार्थी की उसकी दबी इच्छाओं, भावनाओं एवं संवेगों की अभिव्यक्ति मे सहायता करता है।

4. **मनोचिकित्सात्मक परामर्श** **(Psychotherapeutic Counselling)** स्नाईडर **(Snyder)** ने मनोचिकित्सा को इस प्रकार परिभाषित किया है मनोचिकित्सा वह प्रत्यक्ष सम्बन्ध है जिसमें ''मनोवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति अन्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के सामाजिक कुसमायोजन वाले भावात्मक दृष्टिकोणों में सुधार के लिए शाब्दिक माध्यम से सचेत रूप से प्रयास करता रहता है तथा जिसमें प्रार्थी सापेक्ष

रूप में स्वयं के व्यक्तित्व के पुन: गठन से परिचित रहता है, जिसमें से वह गुजर रहा है''।

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

(Psychotherapeutic counselling is the face to face relationship in which a psychologically trained individual is consciously attempting by verbal means to assist another person or persons to modify emotional attitude that are socially maladjusted and in which the subject is relatively aware of the personality re-organisation through which he is going) **- W.V.Snyder**

मनोचिकित्सा तथा परामर्श के सम्बन्ध के बारे में रूथ स्ट्रैंग का कहना है कि ये दोनों ही आपस में सम्बद्ध हैं। आज यह माना जाने लगा है कि परामर्श में चिकित्सात्मक प्रकृति है। सामाजिक कुसमायोजन को समाप्त करने की दृष्टि से मनोचिकित्सात्मक परामर्श बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है।

5. **नैदानिक परामर्श (Clinical Counselling)** नैदानिक परामर्श (Clinical Counselling) शब्द का प्रयोग एच0बी0पेपिंस्की (H.B.Pepinshi) ने किया। उसके अनुसार नैदानिक परामर्श का एक प्रारूप है। नैदानिक परामर्श (Clinical Counselling) का उद्देश्य है-

   (a) छोटी कार्य से सम्बन्धित कुसमायोजनों का निदान और उपचार (Diagnosis and Treatment of minor functional maladjustments)

   (b) परामर्शदाता और प्रार्थी के बीच मुख्यरूप से वैयक्तिक और आमने-सामने का सम्बन्ध (A Relationship Primarily Individual And Face to Face Between Counsellor & Client).

इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि नैदानिक परामर्श का सम्बन्ध व्यक्ति के सामान्य कार्य व्यापार से सम्बद्ध कुसमायोजनों से है। इसके अन्तर्गत परामर्शदाता और प्रार्थी का प्रत्यक्ष सम्बन्ध निहित होता है।

नैदानिक परामर्श की प्रक्रिया में समस्या का विश्लेषण करने तथा समस्या का उपचार सुझाने के प्रयास किये जाते है। नैदानिक मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा भी है। नैदानिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत ऐसे प्रार्थी की

जिसमें सुसमायोजन एवं आत्म अभिव्यक्ति के क्रम में कोई अनुचित व्यवहार विकसित हो जाता है, सहायता करने में व्यावहारिक मनावैज्ञानिक ज्ञान एवं अभ्यास से सम्बद्ध होती है। इसमें निदान (Diagnosis) उपचार (Treatment) एवं प्रतिरोधन (Prevention) और ज्ञान के विस्तार के लिए की जाने वाली शोध हेतु प्रशिक्षण तथा वास्तविक अभ्यास को आत्मसात किया जाता है। नैदानिक परामर्श (Clinical Counselling) और नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) में अत्यधिक समानता है।

6. **वैवाहिक परामर्श–** (Marriage Counselling) आजकल वैवाहिक परामर्श की परम्परा भी चल पड़ी है। इसके अन्तर्गत उपयुक्त जीवन साथी चुनने के सुझाव दिये जाते है और व्यक्ति की यथासंभव सहायता की जाती है। विवाहित प्रार्थी की वैवाहिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए परामर्श दिया जाता है। ऐसी वैवाहिक समस्याओं के विभिन्न कारण हो सकते है जैसे औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि। इन कारणों से परिवार विघटित हो रहे है। उन्हें परामर्श की आवश्यकता है।

7. **बाल केन्द्रित/प्रार्थी केन्द्रित परामर्श (Child Centered/Client-Centered Counselling)** इस प्रकार के परामर्श कार्यक्रम में बालक या प्रार्थी केन्द्र बिन्दु होता है। इसमें व्यक्ति को महत्व दिया जाता है। समस्या या कठिनाईयाँ जिसका सामना बालक कर रहा होता है। परामर्शदाता ऐसा वातावरण उत्पन्न कर देता है कि बालक या प्रार्थी समस्या का समाधान स्वयं तलाश कर लेता है। बालक अपने आप को किसी पर निर्भर नहीं समझता है। इस प्रकार बालक में हीन भावना नहीं पैदा होती है। बालक को इस बात की चिन्ता नहीं रहती है कि कोई अन्य व्यक्ति उसके लिए विचार या सहायता करें। विशेष बच्चों के लिए यह प्रक्रिया उनकी आवश्यकताओं व जरूरतों पर केन्द्रित होती है।

8. **सहयोगात्मक परामर्श** (Supportive Counselling) इस प्रकार के परामर्श कार्यक्रम में परामर्शदाता एवं परामर्श प्रार्थी एक दूसरे का सहयोग करते है। जब समस्या परामर्श प्रार्थी को परेशान करता है। वह इसके निराकरण का हल स्वयं से नही खोज पाता तो परामर्शदाता व परामर्शप्रार्थी मिलकर एक दूसरे को व्यवस्थित करते हुए चरणबद्ध तरीके से समस्या समाधान कर लेते है। इस प्रक्रिया में दोनों का सहयोग रहता है। इसलिए इसे सहयोगात्मक परामर्श कहा जाता है।

दिव्यांगजनों एवं उनकी शिक्षा के संदर्भ में सहयोगात्मक प्रक्रिया एवं सहायता का भाव ही सम्पूर्ण सफलता का एक मात्र साधन है।

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

9. **परिवार** (Family) परामर्श प्रक्रिया रूपी शरीर का मेरूदण्ड है परिवार। क्योंकि बालक या परामर्शप्रार्थी परिवार में जीवन यापन करता है। यह परिवार एकल हो सकता है या संयुक्त। दोनों स्थितियों में यह परामर्श प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। परिवार में माता-पिता, भाई-बहन, अभिभावकगण के साथ अन्य सगे सम्बन्धी एक साथ रहते है। समय के अनुसार समस्यायें भी व्यक्ति के जीवन में स्वाभाविक रूप से आती है। जिसका समाधान परिवार के सभी सदस्यगण मिलकर अथवा जिनसे अधिक आत्मीयता व प्रगाढ़ सम्बन्ध होते है। उनके माध्यम से आसानी से हल किये जाते है। माँ बालक की प्रथम शिक्षिका एवं परामर्शदाता मानी गयी है। यह बालक को सभी सम-विषम परिस्थितियों में एक बेहतर परामर्श देती है। परिवार बालक का प्रथम पाठशाला होता है जहां वह सभी सदस्यों से अन्तःक्रिया करते हुए जीवन कौशलों को सीखते हुए आगे बढ़ता है। अतः बालक के विकास एवं परामर्श प्रक्रिया में परिवार की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विशेष बच्चों एवं उनकी शिक्षा के क्षेत्र में परिवार का सहयोग व परामर्श ही उनके विकास की आधारशिला है। परिवार के सहयोग से ही यह बच्चे समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकते है। परिवार ही इनको सर्वांगिण विकास की दिशा में ले जाता है। परिवार की सहायता से ही ये अपने को पुनर्वासित करने में सफल बनाते हैं।

7.6 औपचारिक एवं अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

<u>औपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन</u> का तात्पर्य ''यह है कि जब निर्देशन क्रिया किसी संस्था संगठन अथवा केन्द्र द्वारा नियत समय एवं नियत स्थान पर प्रदान की जाती है।''

इस प्रक्रिया में निर्देशनकर्ता विषय विशेषज्ञ होता है। इस प्रक्रिया में निर्देशनकर्ता समस्या का समाधान व्यवस्थित व क्रमबद्ध ढंग से करता है।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि औपचारिक निर्देशन अर्थात् व्यवस्थित निर्देशन। इसमें कोई संगठन, निकाय अथवा विभाग परामर्श कार्य में दक्ष व्यक्तियों के समूह व व्यक्तिगत रूप से निपुण व्यक्ति के सहयोग से इस प्रक्रिया को सम्पन्न करता है। इस प्रकार के निर्देशन में समय एवं स्थान भी निर्धारित रहता है। समस्याग्रस्त व्यक्ति या बालक स्वयं या अपने

अभिभावकों के संग उस स्थान पर जाता है। विशेषज्ञों द्वारा समस्यानुसार दिशा निर्देशन प्रदान किया जाता है। जैसे किसी विद्यालय में निर्देशन व परामर्श कक्ष होना जहां विषय विशेषज्ञ द्वारा बालकों की समस्याओं का हल करना इसका योग्य उदाहरण हैं।

अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन का तात्पर्य यह है कि इस प्रक्रिया के लिए कोई नियत स्थान व समय की अनिवार्यता नही होती है। समस्याग्रस्त बालक या व्यक्ति की सहायता व समाधान कोई भी व्यक्ति जो उसका अनुभव रखता है कर सकता है। अर्थात् माता पिता, अभिभावकगण मित्र, दोस्त इत्यादि भी इस प्रक्रिया में भागीदार बन सकते है। इसमें समय विशेष व व्यवस्था की प्रक्रिया आवश्यक नहीं है। समस्या व कठिनाई के आधार पर समाधान तथा दिशा निर्देश विशेषज्ञ अथवा गैरविशेषज्ञ व्यक्ति प्रदान कर सकता है। जैसे शिक्षा ग्रहण करने में कमजोर छात्रों को अभिप्रेरित व निर्देशित करने में माता-पिता, अभिभावक, मित्र या बन्धु बान्धवों की भूमिका इसके अन्तर्गत आती है।

7.7 सारांश

समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए परामर्श व निर्देशन की अहम भूमिका होती है। समाज में फैली विसंगतियों व दूरियों को कम करने में यह व्यवस्था अपनी सार्थक भूमिका अदा करती हैं। इस प्रकार हमने इस इकाई में समावेशी शिक्षा एवं उसके महत्व के बारे में विस्तार से अध्ययन किया। इन बच्चों के लिए परामर्श प्रक्रिया कितनी महत्वपूर्ण है, तथा परामर्श के प्रकार के बारे में भी क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त बालकेन्द्रित, सहयोगात्मक व परिवार की भूमिका का भी अध्ययन किया गया है। परामर्श प्रक्रिया में इनका क्या महत्व है? तथा ये किस प्रकार इसको प्रभावित करते है? इन सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है। निर्देशन के महत्व को व्याख्यायित करते हुए औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन के महत्व को भी निरूपित किया गया है।

7.8 अभ्यास कार्य

1. समावेशी शिक्षा से आप क्या समझते है?विस्तार पूर्वक चर्चा करें।
2. समावेशी शिक्षा के लाभ का वर्णन करें।

3. परामर्श के प्रकार को विस्तार पूर्वक वर्णित कीजिए।

4. बाल केन्द्रित परामर्श पर टिप्पणी लिखें।

5. परामर्श प्रक्रिया में किसी बालक के विकास में परिवार की क्या भूमिका है? व्याख्यायित करें।

6. औपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन को उल्लेखित करें।

परामर्श के प्रकार : बालकेन्द्रित सहयोगात्मक परिवार और औपचारिक व अनौपचारिक परिस्थितियों में निर्देशन

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1– समावेशी शिक्षा

2– शैक्षणिक भावात्मक बौद्धिक एंव शारीरिक रूप कमजोर या प्रबल बालक

3– परामर्शदाता

4– बौद्धिक प्रक्रिया

5– अनिर्देशीय

6– महत्वपूर्ण

7– समन्वित परामर्श

8– भावात्मक पहलू

6– अध्ययन

7.10 उपयोगी पुस्तकें

- The Historical Development of the child Guidance Movement in Education : C. Burt
- An Introduction to Guidance :- Crow & Crow
- Education of axceptional children : K.C. Panda
- Websites & E- links : www.wikipedia .org/wiki

इकाई -8

समूह निर्देशन : समूह नेतृत्व, तरीकें और समूह प्रक्रियायें

संरचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 समूह निर्देशन - अर्थ एवं परिभाषा

8.4 समूह निर्देशन के उद्देश्य एवं महत्व

8.5 समूह नेतृत्व

8.6 नेतृत्व शैली और समूह प्रक्रियायें

8.7 सारांश

8.8 अभ्यास कार्य

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.10 उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

किसी कार्य की सफलता उसके नियोजन व तरीकों पर निर्भर करती है। शिक्षा के संदर्भ में बात करें तो निर्देशन तभी प्रभावी होगा जब वह उद्देश्य परक हो। विशेष बच्चों के लिए निर्देशन व परामर्श की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। शिक्षा व निर्देशन जब इन बच्चों के समूह पर क्रियान्वित की जाती है तब विशेष सावधानी की जरूरत होती है।

अतः इस इकाई के माध्यम से हम समावेशित शिक्षा में समूह निर्देशन के विषय में विस्तृत अध्ययन करेंगे। शिक्षा में समूह नेतृत्व की भूमिका, तरीका एवं समूह प्रक्रिया के बारे में विस्तार से अध्ययन किया गया है। इस प्ररिप्रेक्ष्य में समूह निर्देशन की भी आवश्यकता महसूस होती है। बदलते परिदृश्यों के कारण समूह निर्देशन की आवश्यकता और बढ़ जाती है।

विकास का पक्ष चाहे वो शैक्षिक, व्यवसायिक, व्यक्तिगत, समाजिक, धार्मिक पक्षों के साथ-साथ विद्यालय के वातावरण में परिवर्तन होने पर समूह निर्देशन की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों की विभिन्न

प्रकार की समस्याएं उत्पादकता आदि के कारण भी समूह निर्देशन की आवश्यकता महसूस होती है। अपने व्यापक रूप में निर्देशन में विभिन्न प्रकार के शैक्षिक आयोजन के द्वारा व्यक्ति को उसकी खामियों एवं अभिवृत्तियों से अवगत कराना समायोजन करना ताकि वास्तविक परिदृश्य में वह खुद को समायोजित कर सके। व्यक्तिगत दृष्टिगत के साथ-साथ सामूहिक दृष्टिकोण से समूह निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है। अगर हम प्रकार की बात करें तो निर्देशन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दो प्रकार से होता है। इस इकाई में हम समूह निर्देशन के विषय व उससे सम्बन्धित प्रक्रियाओं का अध्ययन विस्तार पूर्वक करते है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् हम यह ज्ञान प्राप्त कर सकेगें-

1. समूह निर्देशन का अर्थ जान पाऐंगे।
2. समूह निर्देशन को परिभाषित करा सकेंगे।
3. समूह निर्देशन के उद्देश्य व महत्व की व्याख्या कर सकेंगे।
4. समूह नेतृत्व के विषय में ज्ञान रख सकेंगे।
5. समूह निर्देशन की प्रक्रिया व तरीकों को अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
6. समूह निर्देशन की आवश्यकता एवं महत्व को बता सकेंगे।

8.3 समूह निर्देशन अर्थ एवं परिभाषा (Group Guidance-Meaning & Definition)

समूह निर्देशन, निर्देशन कार्यक्रम का ही एक भाग है। निर्देशन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति को खुद निर्देशित करना, खुद का ज्ञान करना एवं खुद का सामान्यीकरण करना होता है। जिसका कुछ भाग सामूहिक संरचना में ही प्राप्त किया जा सकता है। समूह निर्देशन सामूहिक जीवन परिदृश्य में किसी निर्देशन कर्ता द्वारा एक समय पर विभिन्न विद्यार्थियों के समूहों को निर्देशित किया जाता है। शैक्षिक तथा व्यवसायिक योजनाओं के चयन, क्रियान्वयन, एवं आयोजन तथा विकास से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों में सामूहिक वार्तालाप अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समूह निर्देशनः समूह नेतृत्व, तरीकें और समूह प्रक्रियायें

समूह निर्देशन का उद्देश्य एक साथ कई व्यक्तियों को वांछित सहायता एक साथ प्रदान करना है। इसके माध्यम से छात्रों के समूहों को लाभान्वित करने की दृष्टि से कुछ अन्य समस्याओं की चर्चा भी की जा सकती है। इसके द्वारा व्यक्ति के उपबोधन का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

''समूह निर्देशन से तात्पर्य ऐसे निर्देशन से है जिसमें एक से अधिक व्यक्तियों का समूह, समूह के प्रत्येक व्यक्तियों की समस्याओं के समाधान के प्ररिप्रेक्ष्य में निर्देशित होते हैं/विचार करते हैं।''

समूह निर्देशन, निर्देशन का एक रूप है। जिसमें निर्देशनकर्ता एक से अधिक व्यक्ति जो एक ही आयु समूह एवं समस्या के होते है, को निर्देशित करता है समूह निर्देशन कहलाता है। सामान्यतः निर्देशन की प्रारम्भिक अवस्था में जब एक से अधिक व्यक्तियों के समूह को किसी एक ही विषय पर निर्देशन दिया जाए तो उसे समूह निर्देशन कहा जाता है।

शैक्षिक जनसंख्या के बढ़ते दबाव को देखते हुए सामूहिक निर्देशन, निर्देशन के क्षेत्र में उभरता हुआ एक महत्वपूर्ण निर्देशन है। जिसके द्वारा मितव्ययिता रूप से अधिक से अधिक विद्यार्थियों को सामूहिक रूपों से आत्मनिर्देशन, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक रूप में प्रदान किया जाता है। निःसन्देह सामूहिक निर्देशन व्यक्तिगत निर्देशन से महत्वपूर्ण है।

जब शैक्षिक व्यवसायिक तथा व्यक्तिगत निर्देशन के लिए एक या एक से अधिक व्यक्तियों को किसी परिस्थित विशेष में समूह के रूप में निर्धारित किया जाता है तो उसे समूह निर्देशन की संज्ञा दी जाती है। यह सामूहिक क्रियाओं द्वारा निर्देशन की प्रक्रिया कही जाती है।

समूह निर्देशन की परिभाषा

रॉवर हापोक के अनुसार '' सामूहिक निर्देशन वह कोई भी सामूहिक क्रिया हो जो कुछ निर्देशन कार्यक्रम को सुविधा देने या सुधार करने के लिए सम्पन्न की जाती है''।

जेल वार्टस के कहा है कि- सामूहिक निर्देशन को साधारणतया इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि यह सामूहिक अनुभवों का व्यक्ति के उत्तम विकास में सहायता देने एवं इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु चेतना पूर्ण प्रयोग है।

एoजेo जोन्स (1951) निर्देशन किसी भी समूह का वह उद्यम या क्रिया है जिसका प्राथमिक उद्देश्य समूह के प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करना ताकि वो अपनी समस्या का समाधान कर सके एवं प्रभावपूर्ण समायोजन कर सके। इसके अन्तर्गत समूह सूचना दी जाती है जो व्यक्तिगत सूचना के विपरीत होती है। परन्तु यह सूचना व्यक्ति विशेष के लिए हो सकती है। समूह परीक्षण व्यक्तिगत परीक्षण है ना कि किसी समूह का परीक्षण है। समूह निर्देशन केवल न्यायोचित ही नहीं बल्कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

को0एण्ड0को0 समूह निर्देशन परिस्थितियों में प्रयोग किया जाने वाले विचार है। जिसमें निर्देशन सेवा को विद्यालय समूह या विद्यार्थियों के समूह पर किया जाता है।

लीस्टर डाउनिंग ने सामूहिक निर्देशन के सम्बन्ध में लिखा है- सामूहिक निर्देशन, निर्देशन सेवा का वह अंग है जो एक कुशल परामर्शदाता के निर्देशन में नवयुवक को अन्यों के साथ विचार विनिमय एवं अनुभवों में आदान-प्रदान करता है जिनमें अन्तराभूति विकसित होती है। आत्मबोध की सुविधा मिलती है। परिपक्वता में वृद्धि होती है कार्य करने के लिए तर्कसंगत निर्णय लिये जाते है। इसमें ऐसा वातावरण मिलता है जिसमें मनोचिकित्सा लाभ प्राप्त किये जाते है और सामाजिक कुशलता का विकास होता है। सामूहिक निर्देशन का अन्तिम लक्ष्य व्यक्तिगत विकास ही है उन्होंने यहां तक कहा कि सामूहिक निर्देशन संगठित निर्देशन कार्यक्रम का ही एक अंग जिसमें क्रियाएं सम्मिलित की जाती है संगठित निर्देशन कार्यक्रम अनेक छात्रों का परस्पर मिलन होता है। इसमें सूचनाएं प्राप्त करते है विचारों का आदान-प्रदान होता है। भविष्य की योजना बनाते है, और निर्णय लेते हैं।

सार रूप में यह कहा जाता सकता है कि सामूहिक निर्देशन वास्तव में व्यक्तियों के एकत्रीकरण को निर्देशन करता है जिसमें व्यक्ति आपसी प्रत्यक्षीकरण के आधार पर व्यक्तिगत विकास करते है। समूह निर्देशन जैसी क्रियाओं का अपने अन्दर समाहित करता है जो किसी समूह परिस्थित में की जाएं तथा व्यक्तिरूप से सामूहिक परिस्थित में व्यक्ति को निर्देशन किया जाए समूह किसी भी प्रकार का हो सकता है परन्तु निर्देशन का उद्देश्य समूह के प्रत्येक सदस्यों के लिए सामान्य होगा।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 – समूह निदर्शन में किसे सहायता दी जाती है?

....

2 – निदर्शन का उद्देशय समूह के प्रत्येक सदस्यों के लिए कैसा होता है ?

....

8.4 सामूहिक निर्देशन के उद्देश्य एवं महत्व

समूह निर्देशन क्रियाओं के सफल संचालन के लिए यह आवश्यक है कि क्रियाओं के आयोजन के लिए ध्यानपूर्वक योजना तैयार की जाए जिसमें प्राथमिक रूप से समूह के प्रत्येक व्यक्ति को समूह निर्देशन के उद्देश्यों से अवगत कराया जाए तथा उद्देश्यों का निर्धारण किया जाए। सामान्यतः उद्देश्यों में समस्या या विद्यालय की अलग–अलग पृष्ठभूमि के कारण अन्तर होता है इसलिए उद्देश्यों में भिन्नता आ जाती है समूह निर्देशन के कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–

1. विद्यार्थियों को ऐसी सूचना प्रदान करना जिससे विद्यार्थी नये विद्यालय से परिचित हो सके।
2. विद्यार्थी विद्यालय के पाठ्यक्रम क्रियाएं, नियमों एवं विद्यालय के संस्कारों से परिचित हो सके।
3. ऐसी सूचनाएं व सामग्री उपलब्ध कराना ताकि छात्र खुद व्यक्तिगत परामर्श के लिए आ सके।
4. छात्रों को सामूहिक क्रियाओं में प्रभावपूर्ण भागीदारी करने में सहायता प्रदान करना।
5. छात्रों को ऐसे अवसर प्रदान करना ताकि समूह में प्राप्त साक्ष्यों एवं प्राप्त आलोचनाओं का खुद मूल्यांकन कर सके।

6. छात्रों को खुद समूह के सदस्य के रूप में विकसित करने के लिए सहायता करना।

7. शिक्षकों को ऐसा व्यवहार प्रदान करना जिसमें शिक्षक व्यक्तिगत परामर्श के लिए बहुत बड़ी मात्रा में सूचना एकत्रित कर सके।

8. ऐसे व्यक्तियों के लिए सामूहिक चिकित्सा प्रदान करना जो बाहरी वातावरण में समायोजन स्थापित न कर सके।

समूह निर्देशन का महत्व

1. राबर्ट एच0नाप ने समूह निर्देशन के महत्व को बताते हुए कहा है कि यदि सार्थक अभिवृद्धि एवं अनुभव बड़ी संख्या में बच्चों को प्रदान किया जाए तो बच्चों को किसी समूह विशेष में रखना पड़ेगा और बहुत कम समय में विद्यार्थियों के एक बड़े समूह को सूचना प्रदान कर दी जायेगी।

2. परामर्शदाता अपने विद्यार्थियों की सामान्य पृष्ठभूमि से सम्बन्धित जानकारी व उनकी समस्याओं को प्राप्त कर ले तो वो इस जानकारी से विद्यार्थियों के बहुत बड़े समूह पर सामान्यीकरण कर सकता है।

3. समूह निर्देशन विद्यार्थियों के अभिवृत्ति सुधार व व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक होता है।

4. इसके द्वारा विद्यालय में नामांकित नये छात्रों को विद्यालय के कार्यक्रम विद्यालय का इतिहास, परम्परा, नियमों एवं शैक्षिणक, सामाजिक तथा विद्यालय की पाठ्य सहगामी क्रियाओं से अवगत कराया जा सकता है।

5. समूह निर्देशन विभिन्न प्रकार की नेतृत्वपूर्ण प्रशिक्षण देने में भी सहायक है।

6. बालकों के व्यक्तित्व के कुछ पक्ष ऐसे होते है। जिसको निरीक्षण या जांच समूह में लगाया जा सकता है। शिक्षक चाहे तो समूह निर्देशन की क्रियाओं का प्रयोग कर उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं का पता लगा सकता है।

7. व्यक्तिगत परामर्श के लिए समूह निर्देशन की प्रविधियों का प्रयोग करके पर्याप्त मात्रा में परामर्श दिया जा सकता है।

8. एक शिक्षक या परामर्शदाता समूह उपागम द्वारा अपने अधिकतम समय को बचा सकता है तथा व्यक्तिगत रूप से समस्या ग्रसित बालक पर अधिक ध्यान दे सकता है।

समूह निर्देशन विद्यार्थियों को अपनी समस्याओं व चिंताओं को व्यक्त करने तथा दबी हुई भावनाओं को सामूहिक परिस्थिति में स्वतंत्र रूप से चर्चा करने में भी सहयोगी होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क – नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख – इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

3 – किस विद्वान ने समूह निर्देशन के महत्व का वर्णन किया है ?

....

4 – समूह निर्देशन विधार्थियो में क्या परिवर्तन करता है ?

....

8.5 समूह नेतृत्व (Group Leadership)

समूह नेतृत्व का आशय '' नेतृत्व की ऐसी क्रिया से है जो व्यक्तियों अथवा समूहों को इस प्रकार प्रभावित करें कि वे अपनी इच्छा से सामूहिक उद्देश्यों के लिए प्रयास करें।'' (जार्ज आर0टैरी 1954)

जब दो या दो अधिक व्यक्तियों के समूहों को किसी सामूहिक, लक्ष्य व उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अभिप्रेरित किया जायें। सभी मिलकर लक्ष्योन्मुख हो तो समूह नेतृत्व के अन्तर्गत रखा जाता है। इसमें प्रतिनिधित्व करने वाला एक नेता या प्रतिनिधि अवश्य विद्यमान रहता है।

शैक्षणिक संदर्भो में देखा जाये तो कक्षा प्रतिनिधि व इसकी सम्पूर्ण टीम इसके तहत आती है।

औपचारिक परिस्थितियों में बात करें तो समूह का एक छोटा उदाहरण परिवार है। परिवार में मुखिया प्रधान होता है जो समूह नेतृत्वकर्ता

के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार एक परिवार दोस्तों का समूह, एक संस्था ट्रेड यूनियन इत्यादि सभी एक प्रकार के समूह है। इनका नेतृत्व करना समूह नेतृत्व कहलाता है।

समूह नेतृत्व में नेतृत्वकर्ता के अन्दर निम्नलिखित कौशल होना आवश्यक है-

1. तकनीकी कौशल- जैसे ज्ञान, विधियों, तकनीकियों व साधनों को प्रयोग में लाने की योग्यता।
2. मानवीय कौशल निर्णय की योग्यता, व्यवहार सम्बन्धी योग्यता इत्यादि
3. संप्रत्यात्मक कौशल - समूह की जटिलता को समझना, प्रबन्धात्मक एवं पर्यवेक्षात्मक कौशल

8.6 तरीके/शैली और समूह प्रक्रियायें

नेतृत्व शैली जिसकी आवश्यकता समूह नेतृत्व अथवा किसी भी नेता को नेतृत्व का प्रयोग करते हुए अपनाने की पड़ सकती है, उन सभी व्यवहारों को दो मुख्य श्रेणीयों में रखा जा सकता है। कार्य प्रधान तथा सम्बन्ध प्रधान। ये मूलभूत नेतृत्व शैलियां है। नेतृत्व की इन शैलियों को मांग संरचना (Need Structure) के रूप में परिभाषित किया गया है। यह किसी नेता को किसी विशिष्ट प्रकार से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। मूलभूत रूप में ये दो मांग संरचनायें है अनुगामियों के साथ अच्छे सम्बन्ध की मांग तथा कार्य के सफल सम्पादन की मांग। इसका तात्पर्य सम्बन्ध प्रधान तथा कार्यप्रधान नेतृत्व व्यवहार और शैलियां हैं। यह इस पर निर्भर करता है कि इनमें से कौन से व्यवहारों का प्रभुत्व है। किसी भी मांग की संन्तुष्टि में वृद्धि होगी तथा चिन्ता से स्वतंत्रता मिलेगी।

इस प्रकार एक नेतृत्व शैली जो प्रभावी रूप से लोगों के समूहों को निर्देशित करती है। समूहों को प्रेरित करने, मार्गदर्शन करने और प्रबन्धित करने के दौरान एक प्रभावशाली व सफल नेतृत्वकर्ता के विशिष्ट व्यवहार को उल्लेखित व प्रदर्शित करती है। बडे-बडे सामाजिक, परिवर्तनों, आन्दोलनों एवं क्रान्तियों में ये शैलियां जनप्रतिनिधि/समूह नेतृत्वकर्ताओं को अभिप्रेरित करते हुए सफलता की तरह उन्मुख करती है। समूह नेतृत्व को सफल एवं प्रभावी बनाने में भी सहायता करती है। ये तरीके या शैलियों के द्वारा ही नेता प्रभावी व सफल होता है।

समूह प्रक्रियायें (Group Processes)

समूह प्रक्रियायें शैलियों का एक समूह है जिसमें नेता निम्न प्रकार से निर्णय लेता है। यह शैली जी - II के नाम से जानी जाती है। जी - II यह एक ऐसी शैली है जिसमें नेता गोष्ठी में समूह के अध्ययन की भूमिका निभाता है। समूह के साथ समस्या पर विचार विमर्श करता है। इसके साथ ही समूह के प्रयासों में सहयोग देता है। जिससे सामूहिक निर्णय में एकमत पर पहुँचा जा सकें। नेता सूचनायें प्रदान कर सकता है। अपने विचार अभिव्यक्त कर सकता है। लेकिन उन पर अपने निर्णय को आरोपित नही करता है। अथवा वह अप्रत्यक्ष ढंग से समूह को अपने द्वारा लिए गये निर्णयों की स्वीकृति के लिए तैयार कर सकता है। वह ऐसे समाधानों को स्वीकृत एवं क्रियान्वित करता है जो सारे समूह के द्वारा स्वीकृत हो।

ब्रुम तथा यैटन का प्रांसगिकता सिद्धान्त नेतृत्व शैली का व्यावहारिक शब्दों में न कि सामान्य शब्दों में वर्णन करता है। इनमें से कौन सी शैली किस विशिष्ट स्थिति में अधिक उपयुक्त होगी इसका निदान निम्नलिखिलत दो पदों का प्रयोग करके किया जा सकता है-

(i) पहले उस परिस्थिति का निदान करना जिसमें नेतृत्व का प्रयोग किया जाना है।

(ii) किस परिस्थिति में किस शैली का प्रयोग उचित होगा परिणाम (Result) प्रभावी होगा का अध्ययन करना।

शिक्षा के सन्दर्भ में परामर्श व निर्देशन की प्रक्रिया में भी समूह प्रक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐसे व्यक्तियों/छात्रों का चुनाव होता है जो शैक्षिक, आयु एवं भौगोलिक परिदृश्य में भिन्न भिन्न होते है। सभी की समस्याये सामान्य अथवा एक जैसी होती है। शिक्षा से सम्बन्धित विशेषज्ञ/परामर्शदाता समस्त सदस्यों की विभिन्न आवश्यकताओं का विभिन्न उपकरणों द्वारा आकलन करते हुए उसके निष्कर्षों को उनसे साझाा करता है। सदस्यों को अवगत कराते हुए परिणामों का आकलन व अध्ययन करते हुए बेहतरीन कार्य योजना बनाता है। ये सभी क्रियायें समूह प्रक्रिया के अन्तर्गत निहित होती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क - नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख - इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

5 - नेतृत्व शैली किन दो श्रेणियों में रखा गया है ?

....

6 - समूह नेतृत्व को सफल एंव प्रभावी कौन बनाता है ?

....

7 - किसी भी माँग की सन्तुष्टि में वृध्दि तथा चिन्ता से क्या मिलेगी?

....

8.7 सारांश

शिक्षा एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं। जिसमें निर्देशन व परामर्श की अहम भूमिका होती है। समूह एवं व्यक्तिगत रूप से भी निर्देशन शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी होता है। इसलिए समूह निर्देशन के अर्थ व परिभाषा के साथ साथ इसके महत्व का भी वर्णन किया गया है। किसी भी कार्य की सफलता उसके नियोजन व प्रबन्धन पर विशेष रूप से निर्भर रहती है। इन सभी कार्यों को करने के लिए नेतृत्वकर्ता का होना अति आवश्यक है। नेतृत्वकर्ता जब किसी वर्ग अथवा समूह का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई पड़ता है। तब यह क्रिया और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इस प्रकार हमने इस इकाई में समूह नेतृत्व के बारे में अध्ययन किया। तरीके/शैली के विषय में ज्ञान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त समूह प्रक्रियाओं की क्या भूमिका एवं महत्व है। इसे विस्तारित रूप से अध्ययन किया। अतः यह इकाई हमें उपरोक्त तथ्यों को समझने का एक बेहतर दृष्टिकोण प्रदान करता है।

8.8 अभ्यास कार्य

1. समूह निर्देशन की परिभाषा को स्पष्ट करें।

2. समूह निर्देशन के उद्देश्यों की चर्चा करें।
3. शिक्षा के क्षेत्र में समूह निर्देशन के महत्व का वर्णन करें।
4. समूह नेतृत्व से आप क्या समझते है? विस्तार पूर्वक वर्णन करें।
5. समूह प्रक्रिया पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
6. तरीके/शैली पर एक नोट लिखिए।

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर -

1- व्याक्तियों तथा उनके समूहो को

2- सामान्य

3- राबर्ट एच नाप

4- व्यवहार

5- 1. कार्य प्रधान, 2. सम्बन्ध प्रधान

6- शैलीयॉं

7- स्वतन्त्रता

8.10 उपयोगी पुस्तकें

- सूर्या यू0जी0सी0शिक्षाशास्त्र- डा0बी0एल0शर्मा और आ0एन0सक्सेना
- शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श - आर0पी0भटनागर
- Website & E- links: - www.wikipedia.org, www.u.o.u.ac.in

इकाई -9

समूह निर्देशन में चुनौतियाँ

संरचना

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 समूह निर्देशन में चुनौतियाँ

9.4 सारांश

9.5 अभ्यास कार्य

9.6 बोध प्रश्नों का उत्तर

9.7 उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

समावेशित शिक्षा व्यवस्था में परामर्श व निर्देशन करते समय परामर्शदाता व निर्देशक को काफी सजग रहने की जरूरत होती है। इस कार्य के क्रियान्वयन के समय अनेक परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। इसलिए मार्गदर्शक को दक्ष एवं कौशलों से युक्त रहने की कला से युक्त होना चाहिए। क्योंकि समूह निर्देशन के दौरान हमें कई कठिनाइयों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जो विभिन्न रूपों एवं क्षेत्रों के रूप में समूह निर्देशन के दौरान विद्यमान रहतें है। अतः इस इकाई में हम समूह निर्देशन में आने वाले चुनौतियों के विषय में विस्तृत चर्चा करेंगें।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगें-

- समूह निर्देशन के दौरान आने वाली कठिनाईयों से परिचित हो सकेंगे।
- समूह निर्देशन की चुनौतियों को समझ सकेंगे।
- समूह निर्देशन की विसंगतियों को जान पायेंगे जो उसकी सफलता में बाधा उत्पन्न करती है।

9.3 समूह निर्देशन में चुनौतियॉं (Challenges in Group Guidance)

चुनौतियाँ/समस्यायें किसी भी कार्य की निर्बाध सफलता में बाधक होते है। ये चीजें उसकी प्रगति को रोक देते है यदि बात समावेशित शिक्षा के संदर्भ में करें तो यह और भी महत्वपूर्ण व प्रभावी हो जाती है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में सभी प्रकार के विद्यार्थी अध्ययनरत होते है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (दिव्यांगजनों) के लिए तो ये चुनौतियाँ सबसे बड़ी बाधा उत्पन्न करती है। जिसके परिणाम स्वरूप ऐसे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास पिछड़ जाता है। ये दिव्यांग बच्चे समाज की मुख्य धारा में सफलता पूर्वक सम्मिलित होने में कठिनाई का सामना करते है। वस्तुतः इन चुनौतियों के कारण उनका सर्वागिण विकास प्रभावित होता है। यह व्यवस्था सभी प्रकार के बच्चों, चाहे वे दिव्यांग बच्चे हो या सामान्य बच्चें सभी को साथ लेकर चलती हैं इसलिए मार्गदर्शन करते समय हमें बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

यदि बात समूह निर्देशन में आने वाली चुनौतियों का करें तो यहां विशेष सजगता की जरूरत होती हैं। निर्देशनकर्ता को समस्याओं की प्रकृति के आधार पर निर्णय लेने की जरूरत होती है। अतः हम समूह निर्देशन में आने वाली कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों को इस प्रकार व्याख्यायित करेंगे।

गृह व विद्यालय के समायोजन से सम्बन्धित समस्या–

इस प्रकार की निर्देशन प्रक्रिया में बालक घर व विद्यालय के वातावरण, परिस्थिति एवं संरचना को समझ पाने में कठिनायी का सामना करता है। घर का माहौल व परिस्थिति जिसमें बच्चा रहता है। जब वह विद्यालय में प्रवेश करता है तो दोनों के बीच सामंजस्य बनाने में कठिनाई महसूस करता है। शिक्षा के संदर्भ में समूह निर्देशन प्रक्रिया में यह एक चुनौती के रूप में उभर कर सामने आती है।

शैक्षिक योजना से सम्बन्धित समस्या–

शिक्षा के क्षेत्र में सम्बन्धित सम्पूर्ण शैक्षणिक योजनायें जिसमें बालक क्रिया व्यवहार करता है। समूह निर्देशन के दौरान सफलता पूर्वक सम्पूर्ण उपलब्धी नहीं प्राप्त कर पाता है। जिसके कारण बच्चों में विषमताएँ उत्पन्न हो जाती है। यह एक बड़ी चुनौती के रूप में देखी जाती है।

रोजगार से सम्बन्धित समस्या–

समूह निर्देशन में चुनौतियाँ

शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार प्राप्त करने की समस्या आज विश्वव्यापी समस्या के रूप में उभर कर सामने आयी है। व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण समूह निर्देशन में उचित रोजगार प्राप्त करना, आज के युवा पीढ़ी के लिए एक ज्वलन्त शील मुद्दा दे रहा है। जो बहुत बड़ी चुनौती है।

आर्थिक व व्यावसायिक समस्या–

भौतिक व अर्थ प्रधान युग में आज विद्यार्थीगण अपने उचित स्थान को प्राप्त करने में असफल हो रहे है। योग्यता, सामर्थ्य, बुद्धि-लब्धि व शिक्षा के आधार पर आज की युवा-पीढ़ी अपने अूनकूल स्थान को प्राप्त नहीं कर पा रही है। धन, मुद्रा एवं व्यवसाय की विषमता युवाओं में गहरा क्षोभ उत्पन्न कर रही है। जो समूह निर्देशन में एक चुनौती के रूप में ली जाती है।

परिवारिक समस्या–

आज के भौतिकवादी संसार में परिवारों का स्वरूप बिगड़ता जा रहा है। परिवार अस्त व्यस्त व भिन्न-भिन्न हो रहे है। आज समाज से संयुक्त परिवार की अवधारणा बड़ी तेजी से विलुप्त हो रही है। यह एक अच्छे समाज व भविष्य का सूचक नहीं है। जिसके कारण बच्चों का सर्वाधिक विकास प्रभावित हो रहा है। परिवार टूट रहे है। समाज से ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना समाप्त हो रही है। अतः समूह निर्देशन के दौरान बालक या व्यक्ति की पारिवारिक समस्या एक भीषण चुनौती के रूप में परिलक्षित हो रही है।

उपरोक्त तत्वों के अतिरिक्त निर्देशन व परामर्श में कुछ विशेष समस्यायें भी निहित हैं जो इनके साथ साथ समूह निर्देशन में भी एक चुनौती के रूप में देखी जाती है। यह निम्नलिखित रूप से प्रदर्शित है–

1. **व्यक्तिगत समस्या–** इसके अन्तर्गत कुछ प्रमुख समस्यायें इस प्रकार है–

   a) व्यक्तिगत विभिन्नताओं की समस्या

   b) समायोजन की समस्या

   c) संवेगात्मक कठिनाई

d) अवकाश काल का उपयोग

e) स्वास्थ्य एवं शारीरिक विकास से सम्बन्धित समस्या

f) पारिवारिक जीवन से जुड़ी समस्या

g) शिक्षा के स्तरों से जुड़ी समस्या

h) तनाव एवं प्रबन्धन से जुड़ी समस्या

2. **सामाजिक समस्यायें**– इसके तहत निम्नलिखित समस्यायें है–

a) परिवर्तित पारिवारिक दशाएँ

b) उद्योग एवं श्रम की परिवर्तित दशाएँ

c) जनसंख्या की समस्या

d) सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों में परिवर्तन

e) धर्म निरपेक्षता एवं प्रजातन्त्र की रक्षा की समस्या

3. **शैक्षिक समस्यायें**– इसके अन्तर्गत अधोलिखित समस्यायें है:–

a) पाठ्यक्रम का चयन

b) अपव्यय और अवरोधन

c) विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि

d) छात्र असन्तोष एवं अनुशासनहीनता

e) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (दिव्यांगजनों) की समस्या

4. **व्यावसायिक (आर्थिक) चयन की समस्या**–

इसके तहत के निम्नलिखित समस्यायें प्रमुख है–

a) व्यावसायिक चयन से जुड़ी समस्या

b) व्यवसाय चयन से जुडी समस्या

c) व्यवसाय परिवर्तन की समस्या

d) व्यावसायिक स्व के विकास में अच्छें विद्यालय की भूमिका की समस्या

बोध प्रश्न

टिप्पणी

क- नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख- इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1 - चूनौतियाँ/समस्यायें किसी कार्य की सफलता में क्या होते है ?

....

2 - शिक्षा प्राप्ति के बाद रोजगार की समस्या किस रूप मे उभर कर सामने आया है ?

....

3 - आर्थिक समस्या मनुष्य के किस क्षेत्र से सम्बन्धित है?

....

4 - जनसंख्या की समस्या किस प्रकार की समस्या है?

....

5 - पाठ्यक्रम का चयन किस प्रकार की समस्या है?

9.4 सारांश

निर्देशन व परामर्श केवल शिक्षा व दिव्यांगजनों के लिए ही नही बल्कि सभी बालकों के लिए महत्वपूर्ण है। यह विशेष शिक्षा व विशेष बालकों को समझने का एक बेहतर दृष्टिकोण भी प्रदान करता है। इनके अतिरिक्त सामान्य बच्चों को भी अपनी सम्पूर्ण क्षमता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

समूह निर्देशन के अन्दर निहित तत्वों का अध्ययन भी करता है। इसके अन्दर व्याप्त समस्याओं व विकृतियों का अध्ययन कर शिक्षण प्रशिक्षण की प्रक्रिया को सम्पन्न बनाता है। प्रशिक्षणार्थियों के एक बेहतरीन दृष्टिकोण प्रदान करता है। इस प्रकार समूह निर्देशन में व्याप्त समस्यायें

जिसका उपयुक्त अध्ययन कर हम सभी पाठकगण एक निश्चित दिशा व दशा को प्राप्त करते हैं।

9.5 अभ्यास कार्य

1. समूह निर्देशन में व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं को निरूपित कीजिए?
2. समूह निर्देशन की मुख्य चुनौतियाँ क्या है?
3. व्यावसायिक समस्या पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. समावेशित शिक्षा व्यवस्था म ें समूह निर्देशन के अन्तर्गत शैक्षिक क्रिया विधियों/समस्याओं को विस्तार पूर्वक वर्णित करें।
5. गृह व विद्यालय के समायोजन से सम्बन्धित समस्या को उद्घाटित करते हुए एक संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

9.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1- बाधक

2- विश्वव्यापी

3- धन एवं अर्थ

4-सामाजिक समस्या

5-शैक्षिक समस्या

9.7 उपयोगी पुस्तकें

- शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श - एस0आर0 जायसवाल
- निर्देशन के तकनीकी एवं सिद्धान्त - जी0ई0मायर्स
- Website & E- links: - www.wikipedia.org/wiki
- विद्यालय में परामर्श और निर्देशन - सी0एच0पेटरसन